स्टालिन और समाजवाद के राजनीतिक अर्थशास्त्र का बनना

विजय सिंह

सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्यायें पर निबंध के साथ-साथ सोवियत अर्थशास्त्रियों के साथ स्टालिन की पांच चर्चायें जो 1941 और 1952 के बीच आयोजित हुई जो समाजवाद की राजनीतिक अर्थशास्त्र की सैद्धांतिक नींव बिछाने में सीधे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अगस्त 1954 की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पाठ्यपुस्तक में उत्पादन की समाजवादी प्रणाली पर अनुभाग ने इस काम की परिणति का प्रतिनिधित्व किया।[1] इस पुस्तिका के परियोजना पूरी होने की अवधि बीस साल से अधिक की रही। सीपीएसयू (बी) की केंद्रीय समिति के निर्णय के आधार पर अप्रैल 1931 में आई. लापिदुस और के.वी. ओस्त्रोवित्यानोव को एक दूसरे 36 पेज के अनुपूरक काम के साथ राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलग्रन्थ[2] जाचं करने के लिए निर्देशित किया गया था जो 'सोवियत अर्थशास्त्र के सिद्धांत' को समर्पित होता और एक पार्टी पाठ्यपुस्तक के रूप में उपयोग होता। अप्रैल 1936 में केंद्रीय समिति ने इसके आगे राजनीतिक अर्थशास्त्र का एक पाठ्यक्रम और राजनीतिक अर्थशास्त्र की एक पुस्तिका का मसौदा तैयार करने के लिए व्यवस्था करने का संकल्प लिया।[3] राजनीतिक अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक के संबंध में अप्रैल और जुलाई 1937 में दो और प्रस्तावों को अपनाया गया जिसे, यह जोर दिया गया था, ए.ए. बोगदानोव के संक्षिप्त कोर्स के आधार पर तैयार किया जाना था और जिसकी लेनिन द्वारा अत्यधिक प्रशंसा की गई थी।[4]

इन फैसलों के बाद राजनीतिक अर्थशास्त्र के कई मॉडल मैनुअल 1938 और 1941 के बीच लिखे गएँ। 1938 में पहला मॉडल *राजनीतिक अर्थशास्त्र, लघु कोर्स* ए. लेओंत्येव और ए. स्तेत्स्क्य के संपादकत्व के तहत तैयार किया गया था। अपनी ही प्रति पर और अपने ही हाथ से, स्टालिन ने जोड़ा कि 'सीपीएसयू (बी) के केन्द्रीय समिति के एक आयोग ने पार्टी और कोम्सोमोल स्कूलों और पाठ्यक्रमों के लाभ के लिए इसे मंजूरी दी थी'। पांडुलिपि के उपर एक नोट इशारा करता था कि किताब का प्रथम चार भाग में ए.ए. बोगदानोव के *आर्थिक विज्ञान में लघु कोर्स (मास्को, 1897)* के पाठ का उपयोग किया गया था। इन शुरुआती मॉडल की संरचना पहले मॉडल की पृष्ठों की सामग्री की छानबीन से लगाया जा सकता है। समाजवादी गठन के लिए संक्रमण के भाग को चार अध्याय और 28 पृष्ठों में समाहित किया गया था जिसने पूंजीवाद से साम्यवाद में संक्रमण काल की, समाजवादी औद्योगीकरण और कृषि के सामुहिकरण की जांच की। जन-अर्थव्यवस्था की समाजवादी व्यवस्था छह अध्यायों और निम्नलिखित शीर्षकों के साथ 36 पृष्ठों में जांच की गई थी: समाजवादी संपत्ति; उत्पादन से अराजकता के उन्मूलन और समाजवादी योजनाबद्द अर्थव्यवस्था, मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत और समाजवादी श्रम, सर्वहारा

वर्ग और किसानों की दरिद्रता के पूंजीवादी नियम की समाप्ति और मिहनतकास जनता के कल्याण का निर्बाध विकास, सोवियत संघ में समाजवादी पुनरुत्पादन और समाजवाद से साम्यवाद के उच्च चरण में संक्रमण।[5]

1939 में पाठ्यपुस्तक का दूसरा विस्तारित मॉडल ए. लेओंत्येव के संपादकत्व के तहत 1939 में प्रकाशित हुआ। समाजवादी उत्पादन प्रणाली पर ज्यादा व्यापक चर्चा करने की वजह से आकार को 1938 के मॉडल से कुछ ३२० पेज बढ़ा कर ४०८ पेज तक किया गया था। लेओंत्येव ने पुस्तिका के दो और मॉडल का संपादन किया जो अप्रैल और दिसंबर 1940 में छपी। समाजवादी सामाजिक गठन के प्रभागो को और विस्तृत किया गया इसलिए अप्रैल 1940 के संस्करण में 472 पृष्ठ शामिल थे। स्टालिन ने 1940 के मॉडल पर कई टिप्पणी, सुधार और प्रतिक्रिया दी थी और और इस बात के सबूत नहीं है कि वह युद्ध के बाद इन दो संस्करणों के बारे में अपनी जांच जारी रख सके। 29 जनवरी 1941 में स्टालिन, मोलोटोव, वोज्नेसेंस्क्य और सोवियत अर्थशास्त्रियों की चर्चा करने से पहले राजनीतिक अर्थशास्त्र का संक्षिप्त कोर्स के कम से कम चार प्रारूप आ चुके थे। स्टालिन की टिपणी से स्पष्ट है कि केंद्रीय समिति ने माल-मुद्रा संबंधों के संचालन और सोवियत अर्थव्यवस्था में मूल्य के नियम के सम्बन्ध में पाठ्य पुस्तक की प्रस्थापनाओं को स्वीकार नहीं किया था। आर्थिक चर्चा में भाग लेने वाले सोवियत अर्थशास्त्रियों का बहुमत भी इन महत्वपूर्ण सवालों पर पुस्तिकाओं में दर्ज धारणा से असहमति जताई थी। चर्चा के आलोक में फिर से मॉडल पाठ्यपुस्तक संशोधित की गयी। 15 मार्च 1941 को जी. अलेक्संद्रोव और ए. लेओंत्येव के स्तालिन को लिखे पत्र से यह स्पष्ट है, जिसमें सूचित किया गया था कि *राजनीतिक अर्थशास्त्र के लघु कोर्स* को सीपीएसयू (बी) की के.स. से प्राप्त निर्देशों के आधार पर बदल दिया गया था और मैनुअल के पाठ में परिवर्तन किये गए थे। राजनीतिक अर्थशास्त्र के पाठ्यपुस्तक का प्रकाशन युद्ध के चलते टल गया। फिर भी आर्थिक चर्चा के आधार पर ए. लेओंत्येव ने प्रभावशाली संपादकीय लेख *राजनीतिक अर्थशास्त्र के शिक्षण के कुछ सवाल* 1943 में लिखा था जिसे *'मार्क्सवाद के बैनर तले'* पत्रिका के 7-8 संख्या में प्रकाशित किया गया था।[6]

राजनीतिक अर्थशास्त्र के ग्रन्थ के निर्माण करने के प्रयासों को द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद तुरंत फिर से शुरू किया गया। *राजनीतिक अर्थशास्त्र के संक्षिप्त कोर्स* के दो मॉडल क्रमश: 575 और 696 पृष्ठों की 1946 और 1948 में तैयार किए गए थे।[7] यही वे टेक्स्ट थे जिस पर स्टॅलिन और तीन अर्थशास्त्रियों के बीच 22 फेब्रुअरी, 24 अप्रैल और 30 मई 1950 को हुइ तीन बैठको में चर्चा हुई थी। चर्चा के विषय वस्तु पूर्व पूंजीवादी समाज, गुलाम समाज से सामन्ती समाज में संक्रमण, खुद सामंतवाद, पूँजीवाद के तहत मशीन उत्पादन का महत्व और पूर्व एकाधिकार पूँजीवाद के सवाल से संबंधित समस्याओं के आसपास घूमते रहे। 1951[8] में तैयार

की गयी *राजनीतिक अर्थशास्त्र का मॉडल पाठ्यपुस्तक* इसी साल के नवंबर में आर्थिक चर्चा का आधार बनी जिसने इस मसौदे का आकलन किया और जिसमें एक बड़ी संख्या में अर्थशास्त्रियों ने भाग लिया। चर्चा के बाद तीन दस्तावेज वितरित किये गएँ: *राजनीतिक अर्थशास्त्र के ड्राफ्ट पाठ्यपुस्तक के सुधार के प्रस्ताव, गलतियों और अशुद्धियों के उन्मूलन के प्रस्ताव और विवादित मुद्दों पर ज्ञापन।*

नवंबर 1951 की चर्चा के साथ जुड़े आर्थिक प्रश्नों पर अपनी टिप्पणियां के रूप में, *दिनांक 1 फ़रवरी 1952 को* स्तालिन ने आर्थिक विचार-विमर्श पर अपनी प्रतिक्रिया चर्चा में भाग लेने वालों के बीच वितरित किया जिसे बाद में *सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याओं* में शामिल किया गया। स्टालिन के हस्तक्षेप ने, यकीनन, सैद्धांतिक समस्याओं और विवादों के शास्त्रीय मार्क्सवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र के आधार पर एक निश्चित संकल्प का प्रतिनिधित्व किया जिसने पूर्ववर्ती दशकों में सोवियत संघ में माल उत्पादन के क्षेत्र और समाजवाद के तहत मूल्य के नियम के संचालन के संबंध में ज़बरदस्त चर्चा करायी थी। एक पखवाड़े बाद स्टालिन और अर्थशास्त्रियों के बीच अंतिम चर्चा 15 फ़रवरी 1952 को हुई थी। इसने आगे इन सवालों के साथ-साथ समाजवाद से साम्यवाद में संक्रमण के दौर में कम्यून के महत्व को परिलक्षित और स्पष्ट किया. आर्थिक समस्याओं के शेष भाग बाद में उसी वर्ष लिखा गया और समस्याओं से निपटा गया जो नवंबर, 1951 के चर्चा के बाद प्रकाश में आया: कॉमरेड अलेक्जेंडर नोत्किन के लिए उत्तर(21 अप्रैल, 1952), कॉमरेड एल. डी. यारोशेनको की त्रुटियों से संबंधित(22 मई, 1952), और कॉमरेड ए वी सनिना और वी. जी. वेंज्हेर के जवाब (29 सितंबर, 1952)। सीपीएसयू (बी) के 19 वीं कांग्रेस के तुरंत पहले, जो अक्टूबर, 1952 की शुरुआत में आयोजित किया गया था, सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं प्रकाशित किया गया था। 1951 के मॉडल मैनुअल और राजनीतिक अर्थशास्त्र पर स्टालिन के अंतिम प्रमुख कार्य के प्रकाशन पर वैचारिक संघर्ष ने राजनीतिक अर्थशास्त्र मैनुअल के पाठ में आगे गहरे संशोधनों को जरूरी बनाया।

इन परिस्थितियों में सीपीएसयू (बी) के पोलित ब्यूरो ने राजनीतिक अर्थशास्त्र के मॉडल मैनुअल के लिए लेखकों की सामूहिक जिम्मेदारी पुनर्गठित करने के लिए हस्तक्षेप किया। 1952 में इस विषय पर चर्चा करने के लिए डी. टी. शेपिलोव को स्टालिन द्वारा बुलाया गया जो 2 घंटे और बीस मिनट तक चली। स्टालिन का मानना था कि महत्वपूर्ण आर्थिक कार्यों में लगे सोवियत संघ के वैज्ञानिक कैडर और साथ ही फ्रेंच और इतालवी कम्युनिस्टों के लिए गुणवत्ता की पाठ्यपुस्तक आवश्यक थी। उन्होंने एल. लेओंत्येव द्वारा तैयार किये गए मैनुअल के प्रकारों के साथ असंतोष जताई, और किताब के विशेष वर्गों की एक विस्तृत आलोचना प्रस्तुत की। शेपिलोव बाद में याद करते है कि पूंजीवाद के जन्म के समय प्राथमिक संचय के सवाल पर

स्टालिन ने 'पूंजीवाद के औद्योगिक अवधि' का उपयोग, जैसा कि मार्क्स ने *पूंजी* के प्रथम खंड के अध्याय XXIV में और लेनिन ने *रूस में पूंजीवाद के विकास* में किया था, करने में ध्यान न देने के लिए एल. लेऔंत्येव की आलोचना की थी। मैनुअल का मसौदा तैयार करने के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित करने और के. वी. ओस्त्रोवित्यानोव, एल.ए. लेऔंत्येव, एल. एम्. गतोव्स्क्य, ऐ. आई. पश्कोव और दार्शनिक पी. ऍफ़. युदीन से बने नए लेखको के समूह का नेतृत्व करने के लिए शेपिलोव को अनुरोध किया गया था। दशकों बाद शेपिलोव याद करते है कि स्टालिन ने ध्यान से पाठ्यपुस्तक के लिए तैयार सामग्री की छानबीन की थी और 'विस्तृत' टिप्पणी दी थी[9]। सीपीएसयू के 19 वीं कांग्रेस के बाद राजनैतिक अर्थशास्त्र के पाठ्यपुस्तक में सुधार के लिए एक आयोग की स्थापना की गयी थी, जिसने 20 मार्च 1953 तक पाठ्यपुस्तक का नया मॉडल तैयार करने का कार्य निर्धारित किया। राजनैतिक अर्थशास्त्र का पाठ्यपुस्तक इस तरह अगस्त 1954 में प्रकाशित हुआ था। यह ध्यान देने वाली बात है कि कई विषय, विशेष रूप से समाजवादी उद्योग और सामूहिक फार्मों के बीच साम्यवाद की ओर अनुमानित क्रमिक संक्रमण के हिस्से के रूप में धीरे-धीरे उत्पाद विनिमय लागू करने की आवश्यकता, जिसे *आर्थिक समस्याओं* में स्टालिन द्वारा उल्लिखित किया गया था और जिसे उपर्युक्त आयोग ने पाठ्यपुस्तक के नए मॉडल में शामिल करने के लिए संकल्प लिया था, 1954 में प्रकाशित पाठ्यपुस्तक में अनुपस्थित था। 'बाजार समाजवाद' की ओर नया झुकाव जो स्टालिन की मृत्यु के तुरंत बाद स्पष्ट होता है, अगस्त 1954 के पहले संस्करण और साथ ही 1955 के दूसरे संस्करण, जिसका एक अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया था, में परिलक्षित हुआ था। लेकिन ये संशोधन इतने व्यापक नहीं थे इस लिए समाजवाद के राजनीतिक अर्थशास्त्र की समझ की बुनियादी संरचना अप्रभावित रही।केवल 'बाजार समाजवाद' की दिशा में 1957-58 के सोवियत अर्थव्यवस्था के परिवर्तनों के बाद राजनीतिक अर्थशास्त्र के मैनुअल में उग्र सुधारवादी परिवर्तन किया जा सका जैसाकि 1958[10] और 1959[11] के तीसरे संस्करण से स्पष्ट है। आर्थिक नीतियों और 'बाजार समाजवाद' के सिद्धांतों की स्वीकृति के आधार पर स्थापित समानांतर परिवर्तन और आलोचनाएं पश्चिम और पूरब के लोगों के लोकतंत्रों में भी किए गए थे।[12]

हालांकि इन सभी बहसों का समग्र मूल्यांकन इस परिचयात्मक टिप्पणी के दायरे के बाहर है, तो भी जनवरी 1941 की चर्चा के दौरान समाजवादी समाज में मूल्य के नियम पर पर प्रस्तुत प्रस्थापनाओं पर ध्यान आकर्षित करना उचित होगा। ये सोवियत संघ में समाजवाद की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर आरम्भिक विचार विमर्श के पहचान थे जब विषय-वस्तु खुद शैशववस्था में था। सोवियत सत्ता के प्रारंभिक वर्षों में व्यक्त सैद्धांतिक विचारों से अलग, जिसके तहत समाजवाद की स्थितियों के तहत राजनीतिक अर्थशास्त्र का एक विज्ञान के रूप में अस्तित्व समाप्त हो जाना था, स्टालिन उन्नत मत रखते थे। 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की

सीमित व्याख्या' के रूप में पहचाने जाने वाले इस तरह के विचार 'पश्चिमी मार्क्सवादियों' हिल्फेर्डिंग और रोजा लक्जमबर्ग द्वारा प्रचारित किया गया था और सोवियत संघ में वे बुखारिन द्वारा अपनाया गया था। लेनिन ने सख्ती से इन धारणाओं को चुनौती दी थी। बुखारिन स्कूल के विचारों का एक परिणाम यह था कि समाजवादी अर्थव्यवस्था में माल-मुद्रा के संबंधों का अस्तित्व समाप्त हो गया था। जनवरी 1941 के चर्चा से यह स्पष्ट है कि स्टालिन ने लेनिनवादी स्थिति का बचाव किया जिसके अनुसार राजनीतिक अर्थशास्त्र का विज्ञान गैर-पूंजीवादी समाजों पर लागू किया जाना था। (इससे यह भी संकेत मिलता है कि राजनीतिक अर्थशास्त्र की विषय वस्तु में औपनिवेशिक समाजों का अध्ययन भी शामिल है)। इसके अलावा, स्टालिन ने तर्क दिया कि मूल्य संबंध समाजवादी समाज में अपना प्रभाव डालना जारी रखते है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि स्टालिन की समझ का काफी विकास हुआ, इस तरह *सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्यायें* में व्यक्त वे विचार ही है, जिन्हें उनके परिपक्व मत के रूप में माना जाना चाहिए।

जनवरी 1941 में स्टालिन की प्रतिक्रिया सोवियत संघ में मूल्य के नियम के संचालन पर एल.ए. लेऔंत्येव की प्रस्थापनाओ की आलोचना पर केंद्रित हैं। स्टालिन के तर्कों को अप्रैल 1940 के *मॉडल राजनीतिक अर्थशास्त्र संक्षिप्त पाठ्यक्रम* में व्यक्त लेऔंत्येव के विचारो से तुलना कर के दोनों के बीच सैद्धांतिक विभाजन को समझा जा सकता है। लेऔंत्येव ने तर्क दिया कि पूंजीवादी समाज में उत्पादन मूल्य के नियम से तय होते है जो कीमतों में उतार चढाव के माध्यम से इस तरह महसूस कराते है कि इसके माध्यम से बाजार में किसी विशेष माल के उत्पादन में वृद्धि या गिरावट होती है। समाजवादी समाज में स्थिति अलग थी क्योकि अर्थव्यवस्था में श्रम और उत्पादन के साधन का वितरण, और न सिर्फ उत्पादन बल्कि माल संचलन नियोजन के द्वारा निरधारित होते है। लेऔंत्येव, तब तर्क करते है, और यह विवाद का एक प्रमुख बिंदु था, कि समाजवादी अर्थव्यवस्था में *'मूल्य के नियम के लिए कोई जगह नहीं थी'*। कीमते राज्य निर्धारित करती थी जो बाजार के उतार-चढ़ाव पर निर्भर नहीं थे बल्कि उत्पादों के उत्पादन लागत के साथ-साथ आर्थिक निर्माण के कार्य द्वारा निर्धारित होते थे जो और मिहनतकस जनता के भौतिक कल्याण में लगातर सुधार लाने की आवश्यकता की ओर उन्मुख थे। राजनीतिक अर्थशास्त्र के पाठ्यपुस्तक के मसौदे पर विवाद का दूसरा मुद्दा लेऔंत्येव द्वारा मई, 1921 में लेनिन के कथन पर दिया गया जोर था कि समाजवादी उद्यमों के उत्पाद *'राजनीतिक-आर्थिक अर्थ में माल नहीं हैं* और *'किसी भी कीमत पर, वे केवल माल नहीं हैं, वे माल नहीं रही है, मालो के रूप में अस्तित्व ख़त्म कर रही हैं'*।[14] साम्यवाद के उच्च चरण के तहत उत्पाद जरूरत के अनुसार वितरित किया जाता है जबकि समाजवाद के तहत उत्पादों को बेच दिया जाता था, उनकी कीमते होती थी।

अब हम इन प्रास्थाप्नाओं पर स्टालिन और आयोग में बहुमत सोवियत अर्थशास्त्रियों की तीखी प्रतिक्रिया समझ सकते है। यह कह कर कि समाजवाद में मूल्य के नियम की कोई भूमिका नहीं थी, लेऔंत्येव ने अपने आप को हिल्फेर्डिंग-बुखारिन के धरातल पर ला खड़ा किया कि समाजवाद के अंतर्गत मूल्य के नियम ने काम करना बंद कर दिया था। समाजवादी उद्यमों के उत्पाद के गैर-माल चरित्र पर मई, 1921 में लेनिन के विचारों के आंशिक उद्धरणीकरण से एक अधिक जटिल स्थिति पैदा हुई। लेनिन ने निम्नलिखित तरीके से तर्क दिया था:

'सबसे पहले राज्य कोई भी आर्थिक विकास नहीं करा सकता जबतक सेना और शहरी श्रमिकों के पास भोजन के नियमित और पर्याप्त आपूर्ति न हो; मालों का विनिमय खाद्य पदार्थों को इकट्ठा करने का प्रमुख साधन हो जाना चाहिए। दूसरे, माल विनिमय उद्योग और कृषि के बीच संबंधों का और एक काफी अच्छी तरह विनियमित मौद्रिक प्रणाली बनाने के लिए हमारे सभी काम की नींव का एक परीक्षण है। सभी आर्थिक परिषदों एवं सभी आर्थिक इकाइयों को अब माल विनिमय पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए (जिसमे विनिर्मित वस्तुओं के विनिमय भी शामिल है, क्योकि समाजवादी कारखानों द्वारा निर्मित की गयी वस्तुएं और किसानों द्वारा उत्पादित खाद्य पदार्थों के लिए विनिमय की गयी वस्तुएं शब्द के राजनीतिक-आर्थिक अर्थ में माल नहीं है: और किसी भी दर पर, वे केवल माल नहीं हैं, वे माल नहीं रही है, मालो के रूप में अस्तित्व ख़त्म कर रही हैं'।[15]

मई 1921 के लेनिन के विचारो को इस रूप में समझा गया कि, सर्वप्रथम, युद्ध-साम्यवाद की प्रणाली को शहर और गाँव के बीच माल विनमय और व्यापार की स्वतंत्रता के द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता था जिसका मतलब कुल मिलाकर राज्य के नियंत्रण और लेखा के तहत पूंजीपतियों और पूंजीवादी संबंधों के उभार से था।[16] और, दूसरा, युद्ध साम्यवाद की चली आ रही भावना थी जिसके द्वारा साम्यवाद में सीधा संक्रमण संभव माना गया जिसमें मुद्रा संबंधों के माध्यम के बिना उत्पाद विनिमय की प्रणाली के द्वारा समाजवादी उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं का छोटे पैमाने पर कृषि के साथ विनिमय किया जाना था। यहां तक कि जब मई में, 1921 लेनिन ने माल विनिमय की बात की थी, उनके मन में यह अभी भी उत्पादों का विनिमय था। आगे की नई आर्थिक नीति में उत्पादों के विनिमय की प्रणाली को लागू करने के प्रयासों का अंत हो गया। *सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्यायें* में बाद के दिनों के लेनिन के विचारो को स्टालिन ने चिन्हित किया जो 'शहर और गाँव के बीच, उद्धोग और कृषि के बीच एक आर्थिक बंधन की आवश्यकता पर' बल देते थे, 'माल उत्पादन (क्रय और विक्रय द्वारा विनिमय) एक निश्चित अवधि के लिए संरक्षित किया जाना चाहिए क्योकि शहरों के साथ आर्थिक सम्बन्ध का अकेला यही रूप किसानों के लिए स्वीकार्य था'।[17] हाल ही में 1934 में

सीपीएसयू (बी) के 17 वीं कांग्रेस को अपनी रिपोर्ट में स्टालिन को कुछ पदाधिकारियों के विचारों को कि उत्पादों का प्रत्यक्ष विनिमय दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, अपरिपक्व चिन्हित करना पड़ा था। सोवियत व्यापार के अधिक्तम विस्तार की जरूरत थी जो उत्पादों के प्रत्यक्ष विनिमय के लिए आवश्यक शर्तों तैयार करता। इसी तरह आने वाले एक लंबे समय तक, साम्यवाद का पहला चरण, समाजवाद के पूरा हो चुकने तक मुद्रा का उपयोग करना आवश्यक होगा।[18]

जनवरी 1941 की आर्थिक चर्चा में स्टालिन ने एल.ए. लेओंत्येव के विचारो का मुकाबला किया कि मूल्य का नियम पर सोवियत संघ में काबू पा लिया गया था। स्टालिन ने माना कि उत्पादन के साधन समाजवादी संपत्ति थे और इस लिए उन्हें माल नहीं माना जा सकता और यह कहते हुए कि सामूहिक कृषि बाजार में बिक्री से उत्पन्न आय से सामूहिक कृषि के किसानों द्वारा उत्पादन के साधन नहीं ख़रीदा जा सकता था, उत्पादन के साधनों के उत्पाद को भी वैसा(माल) नहीं माना जा सकता था। फिर भी इस तर्क पर कि एक बार मुद्रा अर्थव्यवस्था अस्तित्व में थी तो माले भी अस्तित्व में थी, 1941 में स्टालिन ने माना कि समाजवादी कारखानों द्वारा निर्मित वस्तुएं 'उत्पाद' नहीं बल्कि 'मालें' थी। लेनिन ने, वह याद करते हैं, ट्रोट्स्की के विचारो की आलोचना की थी जिसके तर्क के अनुसार मुद्रा को केवल गणना का एक उपकरण के रूप में माना जाना था: 'उन्हें हमारा उत्तर था: जब एक मजदूर कुछ खरीद रहा होता है, क्या वह मुद्रा की सहयता से गणना कर रहा होता है या वह कुछ और कर रहा होता है? लेनिन को बार-बार पोलित ब्यूरो में कहना पड़ा कि कि प्रश्न का इस तरह से निरूपण गलत है, कि मुद्रा की भूमिका को एक गणना करने के एक साधन तक सीमित नहीं करना चाहिए'। यहाँ तक कि लेनिन के तर्क के आधार पर भी सोवियत उद्यमों द्वारा उत्पादित उत्पादन के साधनो को "उत्पाद" के बजाय " मालों" के रूप में वर्गीकृत करने की कोई वजह नहीं थी क्योकि स्टालिन द्वारा उद्धृत उदाहरण में लेनिन समाजवादी उद्यमों द्वारा उत्पादित उपभोक्ता वस्तुओं की और मुद्रा के माध्यम से श्रमिकों को बेचे जाने की चर्चा कर रहे थे। हलाकि 1941 में स्टालिन के तर्कों में सोवियत अर्थव्यवस्था में 'उत्पाद' और " मालो" के बीच अंतर को समझने के लिए समाधान के तत्व समाहित थे वे एक पूर्ण समाधान की पेशकश नहीं करते। *सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्यायें* में केवल इसे अंततः हल किया गया था। 1952 में स्टालिन ने तर्क दिया कि उत्पादन के साधनों को मालों के रूप में नहीं माना जा सकता, क्योंकि वे बेचीं नहीं बल्कि उद्यमों को आवंटित की जाती थी।[19] केवल विदेशी व्यापार के क्षेत्र में उत्पादन के साधन वास्तविकता में माल थी।[20] उपभोक्ता वस्तुओं के उदाहरण का हवाला देते हुए तब स्टालिन ने तर्क दिया कि ये उत्पादन की प्रक्रिया में खर्च हुए श्रम शक्ति की भरपाई करते थे और सोवियत संघ में उत्पादित और खपत होने वाले मालो के रूप में मूल्य के नियम के तहत आते थे।[21] स्टालिन ने अब उल्लेख किया कि समाजवादी उद्यमों द्वारा उत्पादित उत्पादन के साधन 'माल

होने के गुणों को खो दिया है, वे अब माल नही रहीं हैं और मूल्य के नियम के प्रचालन के क्षेत्र से बाहर है, केवल बाहरी आवरण(गणना आदि) को बनाये हुए है'। सोवियत संघ में माल और मुद्रा को अचानक समाप्त नहीं कर दिया गया था, बल्कि धीरे-धीरे उनकी प्रकृति 'नए के लिए अनुकूलन में, और केवल अपने फार्म (रूप) को बनाए रखते हुए' बदलती गयी थी; 'जबकि नए बस पुराने को नष्ट नहीं करता, बल्कि इसमें पैठता है, अपने फार्म(रूप) को बिना तोड़े, लेकिन नए के विकास के लिए इसका उपयोग करते हुए इसकी प्रकृति और कार्यों में परिवर्तन करता है'।[22]

जनवरी, 1941 की आर्थिक चर्चा समाजवाद की राजनीतिक अर्थशास्त्र के मुख्य सवाल को हल नहीं किया: माल-मुद्रा संबंधों की अवधारण और आर्थिक संबंधों के दायरे में सोवियत संघ में मूल्य के नियम के संचालन का आधार क्या था? 1941 में स्टालिन ने माना कि मूल्य के नियम को समाप्त नहीं किया गया था क्योकि इसकी अनुपस्थिति में श्रम के आधार पर लागत की श्रेणिया, गणना, वितरण या कीमतों की स्थापना को समझना संभव नहीं था। समाजवाद के अंतर्गत मूल्य अस्तित्व में था लेकिन इसे सचेत तरीके से इस्तेमाल किया जाना था। एक ऐसे समाज में जहां श्रम के विभिन्न प्रकार, दोनों कुशल और अकुशल अस्तित्व में था, श्रम के सिद्धांत के अनुसार वितरण निर्धारित करने के लिए मूल्य के नियम का उपयोग करते हुए गणना आवश्यक था। स्टालिन ने तर्क दिया कि सोवियत अनुभव से पता चलता है कि सामूहिक मजदूरी और कम्यून उत्पादन जैसे उपायों से उत्पादन आगे नहीं बढ़ता बल्कि श्रमिकों के लिए टुकड़ा-काम(मत्रानुपाति काम) और पर्यवेक्षी स्टाफ एवं सामूहिक कृषि के किसानों के लिए बोनस की व्यवस्था लागू करने से बढ़ता है। कीमत की स्थापना के क्षेत्र में मूल्य श्रेणियों को भी एक सचेत ढंग से इस्तेमाल करने की आवश्यकता होती है। स्टालिन ने उल्लेख किया कि जब रूस में फसल विफल रहा जिससे रोटी की कमी हुई और कीमते चढ़ गयी तो राज्य ने बाजार में रोटी की आपूर्ति बढ़ा कर हस्तक्षेप किया था जिसके चलते इस माल की कीमत कम हो पाई।

एक दशक से भी अधिक समय बाद *सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्यायें* में समाजवादी अर्थव्यवस्था में माल उत्पादन के अस्तित्व को जारी रखने और मूल्य के नियम के प्रचालन के कारण के सवाल का जवाब देने में स्टालिन की समझ में एक बहुत बड़ा बदलाव देखा जा सकता है। स्टालिन ने अब समाजवादी संपत्ति के दो अलग अलग रूपों के अस्तित्व होने के रूप में सोवियत संघ में मॉल उत्पादन के स्रोत की पहचान की, यानी, समाज की पूरी संपत्ति का गठन करने वाला राज्य क्षेत्र और सहकारी कृषि की सामूहिक संपत्ति। राज्य उद्यमों में उत्पादन के साधन और उत्पादन के उत्पाद राष्ट्रीय संपत्ति थे लेकिन सामूहिक कृषि में, हालांकि उत्पादन के साधन जैसे मशीनरी और भूमि राज्य के संपत्ति थे, उत्पादन के उत्पाद अलग-अलग सामूहिक फार्मों की संपत्ति थी जैसे श्रम एवं बीज, जबकि भूमि जिसका

राष्ट्रीयकरण किया गया था सामूहिक फार्मों को हमेशा के लिए उपयोग के लिए दे दिया गया था और उनके द्वारा लगभग अपने स्वयं के लिए इस्तेमाल किया जाता था। परिणामस्वरुप राज्य केवल राज्य उद्यमों के उत्पाद का निपटारा करता था और न कि सामूहिक फार्मों के उत्पाद का। जैसाकि लेनिन के समय से चला आ रहा था, सिवाए मालो के रूप में किसान अपने उत्पादों को अलग करने के लिए तैयार नहीं थे, इस तरह माल संबंधों की अभी भी सोवियत समाज में जरूरत थी।[23] हम यहाँ ध्यान दें सकते है कि 1951 के राजनीतिक अर्थशास्त्र के पाठ्यपुस्तक के मसौदा में सोवियत संघ में मूल्य श्रेणियों के बने रहने के प्रमुख कारणों में से एक के रूप में समाजवादी संपत्ति के दो रूपों के अस्तित्व का चित्रण किया गया था।[24] माल उत्पादन की निरंतरता के मौलिक आधार के रूप में समाजवादी संपत्ति के दो रूपों की पहचान स्टालिन का एकल योगदान था।

एक बार जब माल संबंधों की निरंतरता के लिए आधार के रूप में समाजवादी संपत्ति के दो रूपों के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया गया इन अवस्थितियों का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक था जो जनवरी, 1941 की चर्चा में अपनाया गया था। स्टालिन ने अब तर्क दिया कि मूल्य का नियम एक ऐसे समाज में लागू होने लिए बाध्य था, जहां माल उत्पादन अभी भी अस्तित्व में था, लेकिन एक नियामक के रूप में, केवल निजी उपभोग के माल संचलन के क्षेत्र में, और यहां भी यह एक सीमा के भीतर इसने काम किया। उत्पादन के क्षेत्र में मूल्य का नियम बिना नियामक प्रक्रिया के अपना प्रभाव डाला था।[25] समाजवादी उद्यमों में उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में लागत लेखांकन, लाभकारिता, उत्पादों और मूल्य निर्धारण के संबंध में मूल्य का नियम ने अपना प्रभाव डाला। स्टालिन ने जोर देकर कहा कि व्यापार के अधिकारियों और सामान्य रूप से योजना बनानेवाले मूल्य के नियम के प्रचालन पर विचार नहीं करते: एक अवसर पर उन्होंने प्रस्ताव किया था कि अनाज की एक टन की कीमत लगभग कपास के एक टन के बराबर तय की जानी चाहिए, और अनाज की कीमत बेक्ड ब्रेड के एक टन के रूप में लिया गया था। केंद्रीय समिति के सदस्यों को कहने के लिए मजबूर होना पड़ा था कि पिसाई और पकाने के अतिरिक्त खर्च को ध्यान में रखते हुए रोटी के एक टन की कीमत अनाज के एक टन की कीमत से ऊपर रखी जा सकती थी और यह कि आम तौर पर कपास की कीमत आम तौर पर अनाज की तुलना में अधिक थी क्योकि यह विश्व बाजार की कीमतों से भी प्रभावित होती थी। तब उन्होंने अनाज की कीमतें कम और कपास की कीमतें बढ़ाने के लिए हस्तक्षेप किया। अगर ऐसा नहीं किया गया होता तो कपास उत्पादन को भुगतना पड़ता।

1953 के बाद आये आर्थिक परिवर्तन समाजवाद की राजनीतिक अर्थशास्त्र पर चले तमाम बहसों और साथ ही 1941 और 1952 के स्टालिन के प्रस्थापनाओं के नजरिये को बदलने वाला था।

केंद्रीकृत निर्देश नियोजन अनिवार्य रूप से 1955 में समाप्त हो गया और गोस्प्लन (Gosplan) और सभी संघ और संघ गणराज्य मंत्रालयों द्वारा किए गए समन्वित योजना द्वारा बदल दिया गया था. 1957 में उत्पादन के साधन के द्वारा उत्पादित उत्पादों की योजनाबद्ध आवंटन की प्रणाली को समाप्त कर दिया गया और सोवियत उद्योग के औद्योगिक उत्पादों को बेचने के लिए गोस्प्लन (Gosplan) के तहत अनेक केंद्रीकृत बिक्री संगठन स्थापित किए गए।[26] नई आर्थिक वास्तविकताओं को परिलक्षित करती राजनीतिक अर्थशास्त्र के पाठ्यपुस्तक के तीसरे संस्करण में उल्लेख किया गया है कि उत्पादन के साधन जो खरीद और बिक्री के माध्यम से सरकार के एक उद्यम से दूसरे के लिए स्थानांतरित किये गए थे, मालो के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज किया है।[27] इन घटनाओं के पूरक के रूप में कृषि क्षेत्र के लिए कृषि मशीनरी की योजनाबद्ध आवंटन प्रणाली को समाप्त कर दिया गया और 1957 में मशीन ट्रैक्टर स्टेशनों के लिए उत्पादन के साधन की बिक्री के लिए एक विशेष बिक्री संगठन स्थापित की गयी. अगले वर्ष सोवियत सरकार ने मशीन ट्रैक्टर स्टेशनों को भंग कर दिया और सामूहिक फार्मों के लिए कृषि मशीनरी की बिक्री की अनुमति दी। परिणामस्वरुप उद्योग और कृषि दोनों क्षेत्र में उत्पादन के साधन अब मालों के रूप में प्रसारित होना शुरू हुआ।

राजनीतिक अर्थशास्त्रियों के एक वर्ग ('तोवार्निक्स' के रूप में जाने जाने वाले) ने अब 'समाजवाद की राजनीतिक अर्थशास्त्र' तैयार करने की महती जिम्मेदारी पर अमल शुरू किया जो सोवियत संघ में नए बाजार अर्थव्यवस्था की जरूरतों के लिए जवाब देता। नई व्यवस्था में जनवरी 1941 के स्टालिन की चर्चा उग्र आलोचना की विषयवस्तु बनी। *सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्यायें* की खुली आलोचना पहले ही सीपीएसयू की बीसवीं कांग्रेस में मिकोयान द्वारा आरम्भ कर दिया गया था। ख्रुश्चेव की अवधि में 1941 के बातचीत की मानक आलोचना निम्नलिखित थे:

'1941 में, अर्थशास्त्रियों के साथ एक बातचीत में स्टालिन ने घोषणा कर दी कि मूल्य का नियम सोवियत संघ में अस्तित्व था। लेकिन इस नियम और कीमत सहित मूल्य की श्रेणियों की उनके द्वारा दी गयी बहुत ही सीमित व्याख्या के चलते पूर्व अवधारणाओं की तुलना में थोड़ा बदलाव हो पाया। मूल्य का नियम इतना 'संक्षिप्त' किया गया था कि वास्तव में, इसकी भूमिका से इनकार किया गया था। माल और मूल्य की श्रेणियों को उत्पादन के साधनों पर राज्य के स्वामित्व के साथ असंगत घोषित किया गया था और 'पूंजीवाद के पुराने श्रेणियों' के उत्पादन के साधनो के उत्पादन - क्षेत्र में इसे स्वीकार नहीं किया गया था, स्टालिन के शब्दों में, केवल 'बाह्य पहलु' बचे रहे थे।

'स्टालिन ने केवल सामूहिक कृषि उत्पादन के लिए मूल्य के नियम को उत्पादन के नियम के रूप में मान्यता दी। लेकिन वास्तव में इसे भी नहीं स्वीकार किया जब यह दावा किया कि कृषि उपज की योजनाबढ़ खरीद भाव, अर्थात कीमते जिस पर सामूहिक कृषि अपने उत्पादन बाजार के लिए थोक में बेचते थे, मूल्य पर आधारित नहीं की जा सकती। उन्होंने घोषणा की कि मूल्य योजना बद्ध कीमत गठन के साथ पूरी तरह से असंगत था।

'हाल के वर्षों में आर्थिक सिद्धांत और व्यावहारिक आर्थिक गतिविधियों दोनों में लाभ की ओर रुख में तेजी से परिवर्तन हुआ है। अतीत में समाजवाद के विरासत से मिले माल, मूल्य, कीमत और लाभ जैसे श्रेणियों के लिए निहायत गलत दृष्टिकोण सहित आत्मवादी प्रस्थपनाओ को, जो स्टालिन के व्यक्तित्व की व्यक्ति पूजा की अवधि के दौरान प्रचलित हुए थे, पार्टी ने सख्ती से छोड़ दिया है।' [28]

एल. एम्. गतोव्स्क्य ने यहाँ एक ऐसे समय में विचार व्यक्त किया है जब माल उत्पादन सोवियत अर्थव्यवस्था में सर्वव्यापी हो गया था। स्टालिन के विचारों को ध्वस्त करना आवश्यक महसूस किया गया था क्योंकि माल उत्पादन और मूल्य के नियम अर्थव्यवस्था में कार्य करना जारी रखे हुए था, जबकि इसके कार्य के क्षेत्र को प्रतिबंधित करना आवश्यक था।

'सोवियत अर्थशास्त्रियों के साथ पांच बातचीत 1941-52' को किसी भी भाषा में पहली बार प्रकाशित करने के कार्य को यह पत्रिका एक सम्मान की बात मानती है।[29]

संदर्भ

1. राजनीतिक अर्थशास्त्र, पाठ्यपुस्तक , मास्को, 1954, पृष्ट 316-632 इस मैनुअल का दूसरा संस्करण 1955 में सोवियत संघ में प्रकाशित किया गया था और एक अंग्रेजी अनुवाद के रूप में बाहर आया था: सी.पी. दत्त और एंड्रयू रोथस्टीन *सम्पादक, राजनीतिक अर्थशास्त्र* । सोवियत संघ के एकेडमी ऑफ साइंसेज के अर्थशास्त्र, लंदन, 1957 के संस्थान द्वारा जारी एक पाठ्यपुस्तक
2. आई. लापिदुस और के. ओस्त्रोवित्यानोव, राजनीतिक अर्थशास्त्र की एक रूपरेखा लंदन, 1929
3. आर्काइव ए.एन. एसएसएसआर, एफ 352, वहीँ.1,स. Khr. 165, एल।1-4
4. एफ 352, वहीँ.1,स. Khr. 23, *l.* 5.
5. डी. वी. वलोवोई के *अर्थव्यवस्था: अलग अलग वर्षों के दृश्य (गठन, आर्थिक तंत्र के विकास और पुनर्गठन) मास्को,* 1989, पेज 46-51 में युद्ध पूर्व मॉडल राजनीतिक अर्थशास्त्र

मैनुअल पर तथ्यात्मक विवरण देखा जा सकता है. और भी देखे संप. ऐ. लेओंत्येव, राजनीतिक अर्थशास्त्र, लघु कोर्स, Gosizhpolit,मास्को, अप्रैल 1940, 472 पृ. मुद्रित पांडुलिपि।

6. एल. ऐ. लेओंत्येव, सोवियत संघ में राजनैतिक अर्थशास्त्र, स. जी. अधिकारी, मार्क्सवादी मिसेलनी, खंड 2, बम्बई, 1945, पृ.80-114.
7. राजनीतिक अर्थव्यवस्था, लघु कोर्स, मास्को, 1946,पृ. 575, और राजनीतिक अर्थव्यवस्था, लघु कोर्स, मास्को, 1948,पृ. 696 मुद्रित पांडुलिपि.
8. राजनीतिक अर्थव्यवस्था, पाठ्यपुस्तक, Gosizhpolit, मास्को, 1951, पृ. 502 मुद्रित पांडुलिपि.
9. तमारा तोचानोवा, मिखाइल लोज्हिनकोव (संकलनकर्ता) और उनमें शेपिलोव में शामिल: (*आदमी, युद्ध, राजनीति का सच्चा सिद्धांत मास्को, 1998, पृ। 127-28, 180-82, 281-82।*
10. राजनीतिक अर्थशास्त्र, पाठ्यपुस्तक, तीसरा संशोधित संस्करण, मास्को, नवम्बर, 1958, 680 पृ.
11. राजनीतिक अर्थशास्त्र, पाठ्यपुस्तक, तीसरा संशोधित एवं विस्तृत संस्करण, मास्को, नवम्बर, 1959, 708 पृ.
12. ऑस्कर लैंग, स., समाजवाद की राजनीतिक अर्थशास्त्र की समस्याएं, नई दिल्ली, 1962; माओ त्से तुंग, सोवियत अर्थशास्त्र की एक आलोचना,, न्यू यॉर्क, 1977 और माओ स्टालिन पर, समाजवाद के अर्थशास्त्र, एडिनबर्ग, 1977.
13. राजनीतिक अर्थशास्त्र, लघु कोर्स, स., एल लेओंतिए, मास्को, अप्रैल 1940, पृ.350 मुद्रित पांडुलिपि
14. वहीँ., पेज 349. जोर एल. ए. लेओंतिए द्वारा जोड़ा गया. और भी देखे: वी. आई. लेनिन, संग्रहित रचनाएं, खंड, 32, मास्को, 1973, पृष्ट 384
15. *ऊपर उधृत*
16. वहीँ पृष्ट 385
17. जे. स्टालिन, सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं, मास्को, 1952, पृष्ट.17. जोर मूल में.
18. जे. स्टालिन, रचनाएँ, खंड 13, मास्को, 1956 पृष्ट 349-50
19. जे. स्टॅलिन, आर्थिक समस्याएं पृष्ट 58
20. वहीँ पृष्ट 59
21. वहीँ पृष्ट 23
22. वहीँ पृष्ट 59
23. वहीँ पृष्ट 19-21
24. राजनीतिक अर्थशास्त्र, पाठ्यपुस्तक, मास्को, 1951, पृष्ट 343-44, मुद्रित पाण्डुलिपि

25. जे. स्टालिन, आर्थिक समस्याएं पृष्ट 23
26. विजय सिंह, 'स्टालिन और 'सोवियत संघ में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद' बाजार समाजवाद के प्रश्न' रेवोलुशनरी डेमोक्रेसी, खंड 1, संख्या 1, अप्रैल 1995 पृष्ट 9.
27. राजनैतिक अर्थशास्त्र, तीसरा संशोधित संस्करण, मास्को, 1958, पृष्ट 503
28. एल गतोव्स्क्य 'समाजवादी व्यवस्था में मुनाफा की भूमिका, कोम्मुनिस्ट, संख्या 18, 1962.
29. जनवरी 1941 बातचीत की एक छोटी संस्करण *रिचर्ड कोसोलापोव, कॉमरेड स्टालिन के विचार*, मास्को 1995, पृष्ट 161-168 में प्रकाशित किया गया है.

सोवियत अर्थशास्त्रियों के साथ पांच चर्चाएँ, 1941-1952

जे. वी. स्टालिन

सोवियत अर्थशास्त्रियों के साथ बात चीत के दस्तावेज़-

तारीख 29 जनवरी 1941

राजनैतिक अर्थशास्त्र के मुद्दे पर

राजनैतिक अर्थशास्त्र के उद्देश्य

राजनैतिक अर्थशास्त्र के उद्देश्य की कई परिभाषाएं है: एंगेल्स की परिभाषा है जो राजनैतिक अर्थशास्त्र को उत्पादन, विनिमय और वितरण के विज्ञानं के रूप में देखता है, पूंजी के लिए तैयार किये गए अपने नोट्स में मार्क्स की परिभाषा है, लेनिन की परिभाषा है जो 1889 में बोग्दानोव द्वारा दिए गए परिभाषा को स्वीकार करता है। हमारे यहाँ कई किताबी कीड़े है और वे एक परिभाषा को दूसरे के सामने खड़ा करेगें। हमें उद्धरणों से बहुत लगाव है। और उद्धरण हमारी अज्ञानता के संकेत है। यही कारण है कि हमें बहुत गंभीरता से राजनैतिक अर्थशास्त्र की परिभाषा के ऊपर सोचना चाहिए और तब उसके दाएरे के अन्दर रह कर इसे प्रस्तुत करना चाहिए।

यदि हम कहते है कि 'राजनैतिक अर्थशास्त्र ऐतिहासिक रूप से विकास कर रहे सामजिक उत्पादन प्रणाली का विज्ञानं है, तो लोग तुरंत नहीं समझ पायेगें कि हम अर्थव्यवस्था और लोगो के बीच के सम्बन्ध के बारे में बात कर रहे है। यह कहना बेहतर है कि राजनैतिक अर्थशास्त्र सामजिक उत्पादन संबंधो के विकास का यानिकि लोगो के बीच आर्थिक सम्बन्ध का विज्ञानं है।

यह परिभाषा व्यक्तिगत और उत्पादन दोनों उद्देश्यों के लिए आवश्यक उपभोग के साधनों के उत्पादन और वितरण को संचालित करने वाले नियम की व्याख्या करता है। जब मै वितरण की चर्चा करता हूँ, शब्दों के संकुचित अर्थ में वितरण की सामान्य अवधारणा यानि कि व्यक्तिगत उपभोग के साधनों का वितरण, मेरे दिमाग में नहीं होती। हम वितरण का उसी अर्थ में चर्चा कर रहे है जिस अर्थ में एंगेल्स द्वारा दुहरिंग मतखंडन में प्रयोग किया गया है, जहाँ वे वितरण को उत्पादन के साधनों और व्यक्तिगत उपभोग के साधनो के स्वामित्व के रूप में वितरण का विश्लेषण करते है।

अगले पृष्ठ पर, दूसरे पैराग्राफ पूरा होने के बाद, हमें निम्नलिखित शब्दों को जोड़ना चाहिए: 'यानिकि उत्पादन के साधनों का एवं बाद में लोगो के जीवन के लिए आवश्यक भौतिक वस्तुओं का वितरण समाज के सदस्यों के बीच कैसे होता है'।

पूँजी के चौथे खंड के लिए मार्क्स के तैयार किये गए नोटस के बारे में तो निश्चित रूप से आपको पता होगा। वहाँ राजनीतिक अर्थशास्त्र के उद्देश्य की परिभाषा आप पाएगें। जब मार्क्स उत्पादन की बात करते हैं, वह परिवहन (इस बात से स्वतंत्र कि हम लंबी दूरी या छोटी दूरी के परिवहन, तुर्किस्तान से कपास के परिवहन या एक कारखाने के आंतरिक परिवहन के बारे में बात कर रहे हैं) को शामिल करते हैं। मार्क्स के साथ वितरण की सभी समस्याये उत्पादन की अवधारणा में शामिल हैं।यहां मौजूद लोग क्या सोचते हैं: क्या जो परिभाषा यहाँ रेखांकित की जा रही है, सही है?.

टिप्पणी: बिनाशर्त, उल्लिखित परिवर्तन एक मौलिक सुधार लाता है।

प्रश्न: क्या परिभाषा में 'सामाजिक उत्पादन' के संबंधों शब्द का प्रयोग सही है? क्या यहाँ 'सामाजिक' शब्द अप्रासंगिक नहीं है। आखिरकार, उत्पादन भी सामाजिक है। क्या यह अपने को दोहराना नहीं होगा?

उत्तर: नहीं, हमे एक हाइफन के साथ 'सामाजिक-उत्पादन' लिखना चाहिए, क्योकि, आखिरकार, उत्पादन में तकनीकी संबंध हो सकता है, यहाँ हमें सामाजिक उत्पादन के संबंधों के लिए विशेष रूप से बात करनी चाहिए।

प्रश्न: क्या उपभोग के बारे में बात करते समय 'व्यक्तिगत और उत्पादन' के बजाय 'व्यक्तिगत और उत्पादक' शब्द का प्रयोग ज्यादा उचित नहीं होगा?

थोड़े से बहस के बाद 'व्यक्तिगत और उत्पादन' लिखा गया।

यदि हम उद्देश्य के प्रस्तावित निरूपण को स्वीकार करते हैं, तो सामान्य निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि सभी संरचनाओं में वितरण के सवाल को बहुत अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। अन्यथा, बैंकों, स्टॉक एक्सचेंजों और बाजार के बारे में यहाँ बहुत कम कहा जाता है। इससे काम नहीं चले गा। विशेष रूप से समाजवाद पर अनुभाग भी इसी से ग्रस्त है।

पेज 5 पर शैलीगत अनियमितताएँ हैं। इन्हें हटाया जाना चाहिए। यहाँ लिखा है "विभिन्न उत्पादन प्रणालियों की जाचं और व्याख्या करने वाला और उनमे से प्रत्येक को अलग करने वाले लक्षणों की व्याख्या करने वाला यह एक ऐतिहासिक विज्ञान है'। इसे उचित रूसी में लिखा जाना चाहिए, 'जाचं करने' 'व्याख्या करने' के रूप में नहीं बल्कि विज्ञानं के रूप में जो जाचं करता है और व्याख्या करता है।

मूल्य के नियम के उपर

मैं समाजवाद के अनुभाग पर आ रहा हूँ। कुछ बातें सुधार की गयी है। लेकिन पहले इस खंड में जो किया गया था उसकी तुलना में वहाँ बहुत खराब कर दिया गया है।

यहां यह लिखा है कि मूल्य के नियम पर काबू पा लिया गया है। तो फिर यह समझना मुश्किल हो जाता है कि लागत की श्रेणी कहाँ से आई, जिसके बिना हम गणना नहीं कर सकते, श्रम के अनुसार वितरित नहीं कर सकते और मूल्य निर्धारित नहीं कर सकते। मूल्य के नियम पर अभी तक काबू नहीं पाया गया है। यह सच नहीं है कि हम कीमतों की सहायता से नियंत्रण कर रहे है, हम नियंत्रण करना चाहते है, लेकिन नहीं कर सकते। कीमतों की मदद से नियंत्रण करने के लिए विशाल भंडार, वस्तुओं की बहुतायत होनी चाहिए। केवल तभी हम हमारे कीमतों को निर्देशित कर सकते हैं। जबतक अवैध बाजार और सामूहिक कृषि बाजार है, बाजार कीमतें मौजूद होगीं। अगर कोई मूल्य नहीं है, तो आय को मापने के लिए कुछ भी नहीं है। आय श्रम से नहीं मापा जातें। जब हम जरुरत के हिसाब से वितरण करना शुरू करते है, तब यह एक दम से अलग मामला होता है। लेकिन वर्तमान में मूल्य के नियम पर काबू नहीं पाया गया है। हम सचेत रूप से इसका इस्तेमाल करना चाहते है। हम इस नियम के चौखटे में कीमतों को रखने के लिए वाध्य होते है। 1940 में एस्तोनिया और लाटविया की तुलना में (रूस में - स.) में उपज कम हुई थी। प्रयाप्त रोटी नहीं थी और कीमतें ऊपर की तरफ उछल गयी थी। हमने रोटी की 200,000 पाउंड की पूर्ति की और कीमतें तुरंत नीचे आ गयी। परन्तु क्या हम पुरे देश में सभी बस्तुओं के साथ ऐसा कर सकते है? नहीं, मालो की कीमते निर्देशित करने से अभी हम बहुत दूर है। इसके लिए हमें बहुत ज्यादा उत्पादन करना होगा। अभी की तुलना में बहुत ज्यादा। लेकिन वर्तमान में हम कीमतों की सहायता से नियंत्रण करने में असमर्थ है। और भी, सामूहिक

कृषि बाजार में हुए विक्री से प्राप्त आय सामूहिक कृषि के किसानो को जाता है। जाहिर है इस आय से उत्पादन के साधन नहीं खरीदा जा सकता, और यह आय व्यक्तिगत खपत बढ़ाने की दिशा में चला जाता है।

पोस्टर प्रचार ने पाठ्यपुस्तक में जगह बना ली है। यह काम नहीं करेगा। एक अर्थशास्त्री को तथ्यों का अध्ययन करना चाहिए, और यहाँ अचानक : 'त्रोत्स्किवादी- बुखारिनवादी धोखेबाज' है, इसे उल्लेख करने की क्या जरुरत है कि अदालतों ने इसे या उसे स्थापित किया है. इसके बारे में क्या आर्थिक है? प्रचार बाहर फेंक दें। राजनीतिक अर्थशास्त्र एक गंभीर मामला है।

आवाज: यह बहुत पहले लिखा गया था जब ट्रायल चल रहा था।

उत्तर कब यह लिखा गया था, यह अप्रासंगिक है। अब नया संस्करण प्रस्तुत किया गया है और यह यहाँ भी है। और यह बिना वजह यहाँ है. विज्ञान के क्षेत्र में हम तर्क पर आधारित होते है। और यहाँ हम किसी दुसरे चीज पर आधारित हो रहे है. यह सारे काम को बिगार देता है।

योजना पर

अर्थव्यवस्था के लिए योजना के बारे में बहुत सारे भयानक शब्द कहे गये हैं। क्या सब कुछ नहीं लिखा गया है। 'समाजवादी समाज में श्रम का सीधे सामाजिक चरित्र। मूल्य के नियम पर काबू और उत्पादन में अराजकता का उन्मूलन। समाजवाद के उत्पादन संबंधों को उत्पादक बलों की प्रकृति के अनुरूप लाने के एक साधन के रूप में अर्थव्यवस्था का योजनाबद्ध संचालन'। बिना किसी दोष के योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था का चित्रण किया जाता है। जबकि कोई सरलता से कह सकता है: पूंजीवाद के तहत पूरे समाज के पैमाने पर उत्पादन करना संभव नहीं है, वहाँ प्रतिस्पर्धा है, वहाँ निजी संपत्ति है, जो (उत्पादन के पैमाने को) अलग करती है। जबकि हमारी व्यवस्था में उद्यमें समाजवादी संपत्ति के आधार पर एकजुट हैं। योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था हमारी इच्छा से नहीं है, यह एक *अनिवार्यता* है, अन्यथा सब कुछ ख़त्म हो जाएगा। बाजार और शेयर बाजारों जैसे बुर्जुआ बैरोमीटर को हमने नष्ट कर दिया है जिसकी सहायता से पूंजीपति वर्ग विसंगति को सही करता है। हमने खुद पर सब कुछ ले लिया है। हमारी प्रणाली में योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था उतना ही अपरिहार्य है जितना रोटी की खपत। और ऐसा इस लिए नहीं है क्योंकि हम सभी 'अच्छे' हैं, इसलिए नहीं कि हम सब कुछ करने में सक्षम हैं, और वे नहीं कर सकते, बल्कि क्योंकि हमारी प्रणाली में उद्यमें एकीकृत हैं। उनकी प्रणाली में एकीकरण, केवल ट्रस्ट और उत्पादक संघ (कार्टेल्स) के भीतर संभव है अर्थात संकीर्ण सीमा के भीतर, लेकिन वे सभी लोगों

के लिए अर्थव्यवस्था का प्रबंध करने में सक्षम नहीं हैं। (यहां अपने आप को कौत्स्की के सुपर पूंजीवाद के सिद्धांत की लेनिन की आलोचना की याद दिलाने की जरुरत है।) पूंजीपति उद्योग और कृषि और परिवहन एक योजना के अनुसार नहीं चला सकते। पूंजीवाद के तहत शहर ग्रामीण इलाकों को अनिवार्य रूप से निगल जाता है। निजी संपत्ति वहाँ एक बाधा है। तो थोड़े शब्दों में : हमारी प्रणाली में एकीकरण है, और उनकी प्रणाली में विभाजन है। यहाँ (पेज 369) में यह लिखा है: 'उत्पादक बलों के चरित्र के अनुरूप समाजवाद के उत्पादन संबंधों को लाने के एक साधन के रूप में 'अर्थव्यवस्था की योजनाबद्ध कार्य पद्धति।' यह सब बकवास है, स्कूली बच्चों का 'बकवास है। (मार्क्स और एंगेल्स ने बहुत पहले बात की थी, और वे अंतर्विरोधों के बारे में बात करने के लिए की थी)। लेकिन बेकार में तुम क्यों इस तरह के सामान्यीकरण करने के लिए हमें कह रहे हो? साफ़ साफ़ कहो: उनकी प्रणाली में अर्थव्यवस्था में विभाजन है, संपत्ति के रूप विभाजन लाता है; हमारी प्रणाली में एकीकरण है। आप शीर्ष पर हैं, और हुकूमत आपकी है। सादगी से कहो।

हमें ठीक से नियोजन केंद्र के उद्देश्यों को परिभाषित करना होगा। इसे सिर्फ अनुपात स्थापित नहीं करना है। अनुपात आवश्यक है, लेकिन केंद्रीय महत्व का नहीं है, अभी भी यह गौण हैं।

नियोजन के मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

पहला उद्देश्य एक ऐसे तरह से योजना बनाने में हैं जो पूंजीवादी घेरा से समाजवादी अर्थव्यवस्था की स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है। यह अनिवार्य है, और सबसे महत्वपूर्ण है। यह विश्व पूंजीवाद के खिलाफ संघर्ष का एक रूप है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि धातु और मशीने हमारे पास हो ताकि हम पूंजीवादी व्यवस्था का एक उपांग नहीं बने। यह योजना का आधार है। यह महत्वपूर्ण है। गोएलरो और बाद की योजना इसी आधार पर तैयार किए गए थे।

योजना कैसे बनायी जाए? उनकी प्रणाली में पूँजी अनायास लाभ के आधार पर अर्थव्यवस्था की शाखाओं में वितरित होता जाता है। अगर हमें उनकी लाभप्रदता के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों को विकसित करना होता तो हमारे पास एक विकसित आटा पीसने, खिलौना उत्पादन (वे महंगे हैं और अधिक लाभ देते है), कपड़ा उत्पादन का क्षेत्र होता, लेकिन हमारे पास कोई भी भारी उद्योग नहीं होता। यह बड़े पैमाने पर निवेश की मांग करता है और शुरुआत में घाटे में चलता है। भारी उद्योग के विकास को छोड़ देना वैसा ही है जैसा कि य्र्कोवितेस ने प्रस्ताव किया था। हमने पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के विकास के नियम को उल्टा खड़ा किया है, उनके सिर पर या अधिक सटीक कहे तो उनके पैरो पर खड़ा किया है। हमने भारी उद्योग और मशीन निर्माण के विकास के साथ शुरू किया है। अर्थव्यवस्था की योजना के बिना कुछ भी काम नहीं करेगा।

उनकी प्रणाली में चीजें कैसे काम करती है? कुछ राज्य दूसरों को लूटते है, उपनिवेशों को लूटते है और जबरन ऋण थोपते है. हमारे यहाँ यह नहीं होता. योजना के बारे में बुनियादी बात यह है कि हम दुनिया के पूंजीवादी व्यवस्था का एक उपांग नहीं बने हैं।

नियोजन का दूसरा उद्देश्य समाजवादी आर्थिक प्रणाली के पूर्ण आधिपत्य को मजबूत बनाने और सभी स्रोतों और खामियों, जिससे पूंजीवाद पनप सकता है, को बंद करने में होता हैं। य्र्कोव और ट्रोट्स्की ने एक समय उन्नत और अग्रणी उद्यमों (पुतिलोव फैक्टरी और अन्य) को लाभहीन कह कर बंद करने का प्रस्ताव किया था। इस रास्ते जाने का मतलब समाजवाद 'समाप्त करना' होता। निवेश तब आटा-पीसने और खिलौना उत्पादन में चला गया होता क्योंकि वे लाभप्रद थी। हम इस मार्ग पर नहीं जा सकते थे।

नियोजन का तीसरा उद्देश्य विषमताओं से बचना है। लेकिन चुकिं अर्थव्यवस्था बहुत बड़ा है, सम्बन्ध विच्छेद हमेशा हो सकते हैं। इसलिए, हमें बड़े भंडार की आवश्यकता है। न केवल धन की, बल्कि श्रम शक्ति की भी।

हमें पाठक के लिए कुछ नया उपलब्ध कराने चाहिए और उत्पादन के संबंधों और उत्पादक बलों के बीच संबंध के बारे में अंतहीन दोहराते नहीं रहना चाहिए। इससे कोई परिणाम नहीं निकलता। हमारी अपनी प्रणाली की प्रशंसा करने में हद से पार जाने की कोई जरूरत नहीं है और उन उपलब्धियों को गिनाने की जरुरत नहीं हैं जिसके लिए वे जिम्मेदार नहीं है। मूल्य मौजूद है और भेदकर लगान मौजूद है, लेकिन वे अलग तरह से इस्तेमाल होते हैं। मैं लाभ की श्रेणी के बारे में सोच रहा था - क्या हमें इसे छोड़ देना चाहिए या इसे रखना चाहिए?

टिप्पणी: क्या 'आय' शब्द का उपयोग करना बेहतर हो सकता है?

मोलोटोव: आय एक भिन्न प्रकार की चीज है।

टिप्पणी (एन.ए. वोज्नेसेंस्क्य – स.): शायद समाजवादी संचय हो सकता है?

उत्तर: जब तक लाभ निकाला नहीं गया है यह संचय नहीं है। लाभ उत्पादन का परिणाम है।

प्रश्न: क्या हमें पाठ्यपुस्तक में कहना चाहिए कि समाजवादी समाज में अधिशेष उत्पाद है? इस मामले पर आयोग में मतभेद थे।

मोलोटोव: हमें श्रमिकों को इतना शिक्षित करना होगा कि वे समझे कि वे सिर्फ अपने परिवारों के लिए नही बल्कि पूरे समाज के लिए काम करते हैं।

उत्तर: अधिशेष उत्पाद के बिना आप नई प्रणाली का निर्माण नहीं कर सकते। यह आवश्यक है कि श्रामिक समझे कि पूँजीवाद में उनकी रूचि इस बात में रहती है कि वे क्या पा रहे है। लेकिन समाजवाद के तहत उन्हे अपने ही समाज का ख्याल रखना होता है और यही बात श्रमिको को शिक्षित करती है। आय जारी रहता है, लेकिन यह एक और चरित्र ग्रहण कर लेता है।अधिशेष उत्पाद होता है, लेकिन यह शोषको के पास नहीं जाता, बल्कि लोगों के कल्याण में वृद्धि, रक्षा आदि मजबूत बनाने की दिशा में उपयोग होता है। अधिशेष उत्पाद का चरित्र बदल जाता है।

हमारे देश में श्रम के अनुसार वितरण होता है। हमारे यहाँ प्रशीक्षित और अप्रशीक्षित श्रमिक है। हमें एक इंजीनियर के काम को कैसे परिभाषित करना चाहिए? यह सरल श्रमिक का गुणक होता है। हमारे यहाँ आय श्रम के अनुसार वितरित होता हैं। ऐसा नहीं हो सकता कि यह वितरण मूल्य के नियम से स्वतंत्र हो। हमें लगता हैं कि पूरी अर्थव्यवस्था योजना के अनुसार चलायी जाती है, लेकिन यह हमेशा इस तरह से नहीं चलती। हमारे यहाँ भी एक हद तक स्वछंदता है। हम अनायास नहीं, जानबूझकर मूल्य के नियम के अनुसार गणना करते हैं। उनकी प्रणाली में मूल्य का नियम स्वछन्द रूप से संचालित होता है, इसके चलते विनाश आता है, और विशाल बलिदान की मांग करता है। हमारी प्रणाली में मूल्य के नियम के चरित्र में परिवर्तन हो जाता है, यह एक नया अर्थ, एक नया रूप प्राप्त कर लेता है। हम जानबूझकर, और अनायास ही नहीं, कीमतें निर्धारित करते है। एंगेल्स छलांग की चर्चा करते है। यह एक जोखिम भरा सूत्र है, लेकिन यह स्वीकार किया जा सकता है अगर हम सही ढंग से आवश्यकता के दायरे से स्वतंत्रता के दायरे में छलांग लगाने को समझते हैं। हमें इच्छाशक्ति की स्वतंत्रता को आवश्यकता के रूप में स्वीकार करना चाहिए, जबकि छलांग का मतलब सहज अनिवार्यता से आवश्यकता की स्वीकारिता में संक्रमण से होता है। उनकी प्रणाली में मूल्य का नियम स्वछंद रूप से लागू होता है और यह बड़े पैमाने पर विनाश लाता है. लेकिन हमें चीजों को इस तरीके से चलाना चाहिए की कम से कम नुक्सान हो। मूल्य के नियम के लागू होने से उत्पन्न आवश्यकता हमारे द्वारा सचेत रूप से इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

प्रश्न: सोवियत अर्थव्यवस्था में क्या मालें है, इसके बारे में आयोग में गलतफहमी थी और चर्चा हुई। आयोग में बहुमत की राय के खिलाफ लेखक मालों के बारे में नहीं, बल्कि उत्पादों के बारे में बोलते है।

उत्तर: एक बार जब हमारी अर्थव्यवस्था मुद्रिकृत हो जाती है, हमारे यहाँ भी मालें होती है। सभी श्रेणियां बनी हुई रहती हैं, लेकिन एक नया चरित्र ग्रहण करती है। मुद्रा, उनकी प्रणाली में, शोषण का उपकरण के रूप में कार्य करता है, लेकिन हमारी प्रणाली में यह एक अलग अर्थ लेता है।

प्रश्न: अब तक मूल्य के नियम की व्याख्या एक स्वतःस्फूर्त बाजार में लागू होने वाले नियम के रूप में की गयी थी जो श्रम शक्ति की स्वतःस्फूर्त वितरण निर्धारित करता है।

उत्तर: यह सही नहीं है। किसी को सवाल के सूत्रीकरण के दायरे को संकीर्ण नहीं करना चाहिए। ट्रोट्स्की ने बार बार मुद्रा को गणना के एक साधन तक सीमित किया। उन्होंने एनईपी में संक्रमण से पहले और बाद दोनों समय इस पर जोर दिया। यह गलत है। उनको हमारा उत्तर था: जब एक श्रमिक कुछ खरीदता है, तो क्या वह मुद्रा की सहायता से गणना कर रहा होता है या वह कुछ और कर रहा होता है? लेनिन ने बार बार पोलितब्यूरो में उल्लेख किया था कि सवाल का वैसा सूत्रीकरण गलत है, कि किसी को मुद्रा की भूमिका गणना के साधन तक सीमित नहीं करना चाहिए।

टिप्पणी: एक समाजवादी समाज में अधिशेष उत्पाद - शब्द शर्मनाक है।

उत्तर: इसके विपरीत, हमें श्रमिको को शिक्षित करना चाहिए कि अधिशेष उत्पाद हमारी जरूरत है, यहाँ अधिक जिम्मेदारी है। श्रमिको को समझ लेना चाहिए कि वह केवल अपने और अपने परिवार के लिए नहीं, बल्कि भंडार बनाने और रक्षा आदि मजबूत बनाने के लिए पैदा करते हैं।

टिप्पणी: *गोथा कार्यक्रम की आलोचना* में मार्क्स ने अधिशेष उत्पाद के बारे में नहीं लिखा था।

उत्तर: अगर आप मार्क्स में सब कुछ के लिए जवाब की तलाश करना चाहते हैं तो आपको कहीं नहीं मिलेगा। सोवियत संघ के रूप में एक प्रयोगशाला आपके सामने है जो 20 से अधिक वर्षों से अब अस्तित्व में है, लेकिन आपको लगता है कि मार्क्स को समाजवाद के बारे में आप की तुलना में अधिक जानना चाहिए था। क्या आप नहीं समझते कि गोथा कार्यक्रम की आलोचना में मार्क्स पहले से देख लेने की स्थिति में नहीं थे! अपने दिमाग का उपयोग करना आवश्यक होता है न कि सिर्फ उद्धरणों की श्रंखला इकठे करना। नए तथ्य हैं, बलों के नए संयोजन है - और अगर आप बुरा नहीं माने- अपने दिमाग का उपयोग करने की जरूरत है।

मजदूरी और कार्यदिवस पर

मजदूरी, कार्य-दीवस और श्रमिकों की आय, सामूहिक किसानों और बुद्धिजीवियों के बारे में कुछ शब्द। पाठ्यपुस्तक में यह वर्णन नहीं है, कि लोग काम पर इसलिय नहीं जाते कि मार्क्सवादी सत्ता में है और अर्थव्यस्था नियोजित है, बल्कि इस लिए भी कि यह उनके हित में है, और हमने इस हित को समझा है. श्रमिक न तो आदर्शवादी और न ही आदर्श लोग हैं। कुछ लोगों को लगता है कि बराबरी के आधार पर अर्थव्यवस्था को चलाना संभव है। सामूहिक मजदूरी, उत्पादन में कम्यून: इस तरह के सिद्धांत हमारे पास थे। इस सब से आप उत्पादन आगे नहीं ले जा पाए गे। श्रमिक योजना से अधिक पूरा करते है और प्राप्त करते है क्योंकि हमने श्रमिकों के लिए टुकड़ा -काम, पर्यवेक्षी कर्मचारियों के लिए बोनस प्रणाली और बेहतर काम करने वाले किसानों के लिए बोनस भुगतान की व्यवस्था की है। हाल ही में हमने यूक्रेन के लिए कानून बनाया है।

मैं आपको दो मामलों के बारे में बताउगां। कोयला उद्योग में कुछ साल पहले एक स्थिति बनाई गई थी, जब भूमि के ऊपर काम करने वाले लोग खानों में काम करने वाले लोगों की तुलना में अधिक प्राप्त करते थे। कार्यालय में बैठे इंजीनियर खदानों में काम करने वालो से डेढ़ गुना अधिक प्राप्त करते थे। शीर्ष नेतृत्व, प्रशासन अपने विभागों के लिए सबसे अच्छे इंजीनियरों को आकर्षित करना चाहते है ताकि वे उनकी तरफ रहे। लेकिन काम आगे बढ़ने के लिए, यह आवश्यक है कि लोगों में रुचि हो। जब हमने भूमिगत श्रमिको के लिए मजदूरी बढ़ा दिए, उसके बाद ही काम आगे बढ़ा। मजदूरी के सवाल केंद्रीय महत्व का है।

कपास उत्पादन: एक और उदाहरण लें। अब चार साल से यह ऊपर की ओर सिर्फ इसलिए बढ़ रहा है क्योकि कि बोनस के भुगतान की प्रक्रिया में संशोधन किया गया है। जमीन की एक इकाई से जितना अधिक वे उत्पादन करते है उतना अधिक उन्हें मिलता है. अब वे रुचि रखते हैं।

यूक्रेन में सामूहिक किसानों के लिए बोनस का कानून असाधारण महत्व का है। यदि आप लोगों के हितों को ध्यान में रखेगें, वे आगे ले जाएगें, अपनी योग्यता उन्नत करेगें, बेहतर काम करेगें और स्पष्ट रूप से देखेंगे कि यह उन्हें और अधिक देता है। एक समय था जब एक बौद्धिक या एक प्रसीक्षित कामगार केवल सामाजिक रूप से बहिष्कृत होने के लिए फिट माना जाता था। यह हमारी मूर्खता थी, तब उत्पादन का कोई गंभीर संगठन नहीं था।

लोग स्टालिन के छह शर्तों की बात करते है। सोचने के लिए आये-क्या खबर है! जो कुछ भी वहाँ कहा जाता है, पूरी दुनिया को ज्ञात है, लेकिन केवल हमने भुला दिया है। श्रमिको के लिए टुकड़ा काम, इंजीनियरिंग और तकनीकी कर्मचारियों के लिए बोनस प्रणाली और सामूहिक किसानों के लिए बोनस - ये औद्योगिक और कृषि विकास के लीवर हैं। इन लीवर का उपयोग करें और

उत्पादन में विकास की कोई सीमा नहीं रहे गी और इनके बिना कुछ भी नहीं काम करने वाला है। एंगेल्स ने यहाँ बहुत सारी भ्रांतियां पैदा की। एक समय था जब हम दावा करते थे कि तकनीकी कर्मचारी और इंजीनियर प्रशीक्षित श्रमिको से ज्यादा नहीं पायेगें। एंगेल्स उत्पादन के बारे में एक बात समझ नहीं पायें और उन्होंने हमें भी चकित किया। अन्य राय की तरह यह भी उतना ही हास्यास्पद है कि उच्च प्रशासनिक स्टाफ को बार बार बदल दिया जाना चाहिए। अगर हम इस रास्ते गए होते तो सब कुछ ख़त्म हो गया होता। आप सीधे साम्यवाद में छलांग लगाना चाहते है। मार्क्स और एंगेल्स ने पूर्ण साम्यवाद को ध्यान में रख कर लिखा था। समाजवाद से साम्यवाद में संक्रमण एक बहुत जटिल मामला है। समाजवाद अभी तक हमारे शरीर और रक्त में प्रवेश नहीं किया है, हमें अभी भी ठीक से समाजवाद में चीजों को व्यवस्थित करना है, हमें अभी भी ठीक से काम के अनुसार वितरण स्थापित करना है।

हमारे कारखानों में गंदगी है, लेकिन हम साम्यवाद सीधे जाना चाहते है। लेकिन वहाँ आपको कौन ले जाये गा? हम कचरे में डूब रहे हैं और हम साम्यवाद चाहते हैं। लगभग दो साल पहले एक बड़े उद्यम में उन्होंने मुर्गी प्रजनन- चिकन और कुछ कलहंस- शुरू किया था। ये सब आपको किधर ले जायेगा? गंदे लोगो को साम्यवाद में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी। सूअर बनना बंद करो। और तभी साम्यवाद में प्रवेश के बारे में बात करो। एंगेल्स सीधे साम्यवाद में जाना चाहते थे। वह भावनाओं में बह गए।

मोलोटोव: पेज 333 पर लिखा है: 'आरटल(मजदूर संस्था) का निर्णायक लाभ यह है कि यह सामूहिक किसानों के सामजिक हितो को व्यक्तिगत हित के साथ सही ढंग से जोड़ता है, कि यह सफलता पूर्वक सामूहिक किसानो के व्यक्तिगत हितो को समाज के हितो के साथ सामंजस्य बैठता है'। सवाल का वैसा सूत्रीकरण सवाल से पीछा छोड़ाना है। 'समाज के हितों के साथ सामूहिक किसानों के व्यक्तिगत हित का सही ढंग से संयोजन' क्या है? यह एक खोखला वाक्य है जिसमे ठोस सार बहुत कम है। आपको कुछ इस तरह मिलता है 'जो कुछ भी मौजूद है, तर्कसंगत है।' वास्तव में ऐसा होने से यह बहुत दूर है। सिद्धांत रूप में हम इन सवालों के सही समाधान तक आए हैं, लेकिन व्यवहार में बहुत सारी चीजें हैं जो गलत है और अनुचित हैं। यह समझाया जाना चाहिए। सामाजिक अर्थव्यवस्था पहले रखा जाना है।

टुकड़ा-काम की मजदूरी का सवाल खड़ा करना भी आवश्यक है। एक समय था जब यह सवाल बहुत जटिल था, टुकड़ा-काम व्यवस्था को नहीं समझा गया था। आने वाले मजदूरों के प्रतिनिधिमंड, उदाहरण के लिए, फ्रेंच सिंदिकाल्वादी पूछते है कि हम टुकड़ा काम और बोनस प्रणाली का समर्थन क्यों करते हैं, आखिरकार सभी पूंजीवादी स्थितियों के तहत श्रमिक इसके खिलाफ लड़ रहे हैं। अब हर कोई समझता है कि भुगतान के एक प्रगतिशील प्रणाली के बिना

और टुकड़ा काम प्रणाली के बिना स्ताखानोवितेस और श्रमिको की अग्र-पंक्ति नहीं होती। सिद्धांत रूप में यह सवाल स्पष्ट है। लेकिन व्यवहार में बहुत सारी शर्मनाक बातें हमारे साथ हो रही हैं। 1949 [इस प्रकार से -- स.] में हम वापस जाने के लिए और 1933 के फैसले को दोहराने के लिए मजबूर हो रहे हैं। स्वतःस्फुर्ता हमें विपरीत पक्ष की ओर खींच रहा है। शीर्ष के विभाग सबसे अच्छे इंजीनियरों को अपने साथ रखना चाहते हैं। हम अभी तक इतना विकास नहीं कर पाए है कि हम उतना साफ सुथरा बन सके जितना हम होना चाहते हैं। हमारी वास्तविकता पर बहुत सारा रंग चढ़ा है, और हम जैसा स्वच्छ और व्यवस्थित होना चाहते हैं वैसा बिल्कुल नहीं हो पाए है। हमें अपने व्यवहार की आलोचना करनी चाहिए।

फासीवाद पर

फासीवादी दर्शन पर कुछ और टिप्पणियाँ। वे ऐसे लिखते है, जैसे उनके पास समाजवाद है। इसका आर्थिक सन्दर्भ में खुलासा किया जाना चाहिए। यह वही है जो हिटलर कहता हैं: 'राज्य, लोग! हमारे पूंजीपति केवल 8% प्राप्त करते हैं। यही उनके लिए काफी है'! प्रतियोगिता और उत्पादन की अराजकता, के सवाल पर प्रकाश डालने के साथ अल्ट्रा साम्राज्यवाद के सिद्धांत की मदद से प्रतियोगिता से छुटकारा पाने के पूंजीपतियों के प्रयास के साथ इस सवाल का सूत्रीकरण करने की जरुरत है। यह जरुर दिखाया जाना चाहिए कि वे मरणोन्मुख हो गए है। वे एक कोर्पोरातेवादी प्रणाली का प्रचार कर रहे हैं जैसे कि वह मजदूरों और पूंजीपतियों के वर्ग से ऊपर है और राज्य श्रमिकों की चिंता और देख भाल करता है। और भी वे अलग-अलग पूंजीपतियों को गिरफ्तार कर रहे हैं (यह सच है कि थ्य्सीन(नामी पूंजीपति परिवार स.) बच सकता है)। यही कहना चाहिए कि इस सब में कपट अधिक है, कि यह विशिष्ट पूंजीपतियों पर बुर्जुआ राज्य का सिर्फ दबाव है जो खुद को वर्ग अनुशासन के अधीन नहीं करना चाहते। व्यवसायी समूहन और योजना पर उनके असफल प्रयासों वाले अनुभाग में इसे एक बार उल्लेख किया जाना चाहिए। समाजवाद के अनुभाग में फिर से यह उल्लेख करे। फासीवादी सज्जनों, आपकी प्रणाली में उत्पादन के साधन किसके पास होता है? व्यक्तिगत पूंजीपतियों और पूंजीपतियों के समूहों के पास और इसलिए सिवाय टुकड़ा के आप वास्तविक नियोजन नहीं कर सकते क्योकि अर्थव्यवस्था मालिकों के समूहों के बीच विभाजित है।

प्रश्न: क्या हमें 'फासीवादी' शब्द का उपयोग करना चाहिए?

उत्तर: खुद जिस तरह वे कहते हैं उन्हें वैसा ही कहे: इटालियंस - फासिस्टों के रूप में, जर्मन - राष्ट्रीय समाजवादियों के रूप में।

इस मंत्रिमंडल में मैं [एच.जी.] वेल्स से मिला, और उन्होंने मुझसे कहा कि वह न तो मजदूरों के और न ही पूंजीपतियों सत्ता में होने के पक्ष में है। वह इंजीनियरों के नेतृत्व के पक्ष में है। उन्होंने कहा कि वह रूजवेल्ट का समर्थन करते है जिसे वह अच्छी तरह जानते है और कहते है कि वह एक सम्माननीय व्यक्ति है और श्रमिक वर्ग के प्रति वफादार है। वर्गों के बीच सुलह के बारे में तुच्छ विचार छोटे बुर्जुआ के बीच मौजूद है और प्रचारित किये जाते है. इन विचारों ने फासिस्टों के लिए एक विशेष अर्थ हासिल कर ली है।

एक ऐसी जगह जहाँ आप यूटोपियाइओं के बारे में बात करते है।. यहाँ भी वर्गों के बीच सुलह के विचार को आलोचनात्मक ढंग से उल्लेख करना चाहिए। जाहिर है, यूटोपियाइ(कल्प्नावादी) और फासीवादी जिस तरह से सवाल रखते है उनके बीच एक अंतर है, यूटोपियाइओं के पक्ष में एक विचरण के रूप में, लेकिन इस मुद्दे को दरकिनार नहीं करना चाहिए। ओवेन को बहुत बुरा लगता अगर वह फासिस्टों के रूप में एक ही रैंक में डाल दिया जाते, लेकिन ओवेन की भी आलोचना की जानी चाहिए।

गाली-शैली पूरी किताब से हटा दिया जाना चाहिए। आप कोस कर किसी को नहीं समझाते। आपको जल्द ही विपरीत परिणाम मिलता है, पाठक सतर्क हो सकता है: 'क्योकि लेखक निंदक हो रहा है, इसका मतलब है कि सब कुछ साफ नहीं है'।

लिखना इस तरह चाहिए कि धारणा यह न बने कि उनकी प्रणाली में सबकुछ बुरा है और हमारी प्रणाली में सबकुछ अच्छा है, चीजों को अलंकृत नहीं करना चाहिए।

टिप्पणी: यहाँ यह लिखा है कि राज्य लगभग हर व्यक्ति के लिए योजना बनाता है।

उत्तर: यह बकवास है। सामान्य रूप में, समाजवाद पर अनुभाग में बहुत सारी अटकले है। और भी सरलता से लिखा जाना चाहिए।

प्रश्न: क्या अध्याय का शीर्षक 'पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली की तैयारी' सही है? क्या इससे थोडा यह आभास नहीं होता कि यह सचेत रूप से तैयार किया गया था?

उत्तर: यह एक पारिभाषिक मुद्दा है। निश्चित रूप से 'तैयार' शब्द का उपयोग कर सकते हैं। मुद्दा वास्तव में जन्म और निर्माण के पूर्व शर्त के बारे में है।

वास्तव में उत्पादन की समाजवादी प्रणाली की तैयारी के बारे में एक और सवाल है। यहां यह उल्लेख किया गया है कि समाजवाद पूंजीवाद के अन्दर से नहीं आता। यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि भौतिक पूर्व-शर्त पूँजीवाद के भीतर पैदा होती है, कि आत्मगत और वस्तुगत पूर्वशर्ते पूँजीवाद के भीतर पैदा होती है. यह नहीं भुला जाना चाहिए कि हम पूँजीवाद की ही उपज है।

कामरेड [एल. ए.] लेओंत्येव, [के. वी.] ओस्त्रोवित्यानोव, [ए. आई.] पश्कोव के नोट के अनुसार रचित.

---

22 फरवरी 1950 की चर्चा का रिकार्ड

23 बज कर 15 मिनट पर

राजनीतिक अर्थशास्त्र पर पाठ्यपुस्तक के मॉडल के दो प्रकार हैं। हालांकि, राजनीतिक अर्थशास्त्र के सवालों के और इन सवालों की व्याख्या के प्रति दृष्टिकोण में सिद्धांत रूप में इन दो प्रकारों (के पुस्तक-अनु.) के बीच कोई मतभेद नहीं हैं। इस तरह दो प्रकारो (के पुस्तक-अनु.) होने के लिए कोई आधार नहीं है। (पुस्तक का एक-अनु.) प्रकार लेओंत्येव का है और इसे आधार के रूप में लिया जाना चाहिए।

पाठ्यपुस्तक में हमें अमेरिकी साम्राज्यवाद के समकालीन सिद्धांतों की एक ठोस आलोचना देनी चाहिये. इस सवाल पर लेख बोल्शेविक में और अर्थशास्त्र की समस्याएं में लेख प्रकाशित की गयी है।

अर्थशास्त्र से अनभिज्ञ लोग चीन के पीपुल्स गणराज्य और मध्य और दक्षिण-पूर्वी यूरोप के देशों के लोगों के लोकतंत्रों के बीच, अगर पोलैंड की पीपुल्स डेमोक्रेटिक रिपब्लिक की बात करे तो, भेद नहीं करते। ये अलग- अलग हैं।

पीपुल्स डेमोक्रेसी क्या है? इसमें कम से कम ये विशेषताएं शामिल हैं:1) राजनीतिक शक्ति सर्वहारा वर्ग के हाथों में होना; 2) उद्योग के राष्ट्रीयकरण; 3) कम्युनिस्ट और मजदूर पीपुल्स दलों की मार्गदर्शक भूमिका; 4) न केवल कस्बों में बल्कि ग्रामीण इलाकों में भी समाजवाद का निर्माण। चीन में हम शहरों में या गांवो में समाजवाद के निर्माण के बारे में बात भी नहीं कर

सकते। कुछ उद्यमों का राष्ट्रीयकरण किया गया है, लेकिन यह सागर में एक बूंद है। आबादी के लिए आम औद्योगिक वस्तुओं का उत्पादन शिल्पकारों द्वारा जाता है। चीन में लगभग 30 लाख शिल्पिकार हैं। चीन के पीपुल्स लोकतंत्र और पीपुल्स गणराज्य के देशों के बीच महत्वपूर्ण असमानताएं हैं:1) 1904-05 में बोल्शेविक जैसा बात करते थे उससे मिलता जुलता चीन में सर्वहारा वर्ग और किसानों के एक लोकतांत्रिक तानाशाही मौजूद है 2) चीन में विदेशी पूंजीपति वर्ग द्वारा किया गया उत्पीड़न था, इसलिए चीन के राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग आंशिक रूप से क्रांतिकारी है; इसे देखते हुए राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ गठबंधन की अनुमति है, चीन में कम्युनिस्ट और पूंजीपति वर्ग एक गुट शामिल हैं।

यह अस्वाभाविक नहीं है। 1848 में मार्क्स भी, जब वह नुए रहेएंस्चे ज़ितुंग (Neue Rheinische Zeitung) संपादन कर रहे थे, पूंजीपति के साथ गठबंधन किये थे, लेकिन यह लंबे समय के लिए नहीं था। 3) चीन में वे अभी भी सामंती संबंधों के परिसमापन के कार्य का सामना कर रहे है, और इस अर्थ में चीनी क्रांति 1789 की फ्रांसीसी बुर्जुआ क्रांति की याद दिलाता है। 4) चीनी क्रांति की खास विशेषता है कि कम्युनिस्ट पार्टी राज्य के शीर्ष पर है।

इसलिए, कह सकते हैं कि चीन में एक लोगों के लोकतांत्रिक गणराज्य है लेकिन केवल विकास के अपने पहले चरण में।

एक महीने की अवधि के भीतर पाठ्यपुस्तक के मॉडल में संशोधन को पूरा करने के लिए कामरेड मलेंकोव, लेओंत्येव, ओस्त्रोवित्यानोव और युदीन से बने आयोग को सिफारिस करने का निर्णय लिया जाता है।

कामरेड [एल. ए.] लेओंत्येव, [के. वी.] ओस्त्रोवित्यानोव और [पी. ऍफ़.] युदीन के नोट के अनुसार तैयार किया गया.

---

24 अप्रैल 1950 की चर्चा के रिकार्ड

23.30 बजे.

मैं राजनीतिक अर्थशास्त्र पर पाठ्यपुस्तक के नए मॉडल के बारे में कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियों करना चाहता था।

मैंने पूर्व पूंजीवादी संरचनाओं और पूंजीवाद के बारे में संबंधित 100 पृष्ठों को पढ़ा है। समाजवाद पर खंड को भी थोडा मैंने देखा था। समाजवाद के बारे में मै कभी दुसरे समय बोलूगां। आज मैं पूंजीवाद और पूर्व पूंजीवादी संरचनाओं पर अनुभाग से संबंधित कमियों के बारे में बात करना चाहता हूँ। आयोग का काम गलत दिशा में चला है। मैंने कहा है कि पाठ्यपुस्तक मॉडल के पहले प्रकार को आधार के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। और, जाहिर है, इसका मतलब यह समझा गया कि पाठ्यपुस्तक में किसी विशेष सुधार की जरूरत नहीं है। ये गलत है। पर्याप्त सुधार की जरूरत है।

सबसे पहला और पाठ्यपुस्तक की मुख्य कमी, जो मार्क्सवाद की पूरी अज्ञानता को दर्शाता है, वह पूंजीवाद के तहत विनिर्माण और मशीन उत्पादन की अवधियों के बारे में है। विनिर्माण पूंजीवाद की अवधि पर अनुभाग फूला हुआ है, इसे 10 पृष्ठ आवंटित किया गया है और मशीन उत्पादन की अवधि की तुलना में अधिक महत्व दिया गया है। वास्तव में, पूंजीवादी मशीन उत्पादन की अवधि अनुपस्थित है। यह बस गायब हो गया है। मशीन उत्पादन की अवधि को एक अलग अध्याय नहीं दिया गया है, 'पूँजी और अधिशेष मूल्य' के अध्याय में इसे कुछ पन्ने आवंटित किये गए है। मार्क्स की *पूँजी* को ले। *पूँजी* में पूँजीवाद के विनिर्माण अवधि को 28 पन्ने मिले है, और मशीन उत्पादन को 110 पन्ने। इसके अलावा, अन्य अध्यायों में भी, मार्क्स मशीन उत्पादन की अवधि के बारे में बहुत सारी बाते करते है। वैसे ही मार्क्सवादी लेनिन ने *रूस में पूंजीवाद के विकास* नामक कृति में मशीन अवधि पर विशेष ध्यान दिया। मशीन के बिना कोई पूंजीवाद नहीं है। मशीनें क्रांति की मुख्य शक्ति है जिसने समाज में बदलाव लाया हैं। मशीनों की प्रणाली में वास्तव में क्या शामिल हैं इसे पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित नहीं किया गया है। मशीनों की प्रणाली के बारे में, सचमुच केवल एक शब्द कहा गया है। इसलिए, पूंजीवाद के विकास की पूरी तस्वीर विकृत कर दिया गया है।

विनिर्माण कारीगरों के हस्त श्रम पर आधारित है। मशीन हस्त श्रम को हटा देता है। मशीन उत्पादन बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है और मशीन प्रणाली पर आधारित होता है।

हमें ध्यान रखना होगा कि हमारे कार्यकर्ता, हमारे युवा-हमारे लोगों ने 7-10 वर्ष का शिक्षा लिया है। वे सभी चीजों में दिलचस्पी रखते है। वे मार्क्स की *पूँजी* और लेनिन की कृति पढ़ सकते है। वे पूछ सकते हैं: क्यों प्रश्न का निरूपण मार्क्स और लेनिन के तरीके से नहीं किया गया है? यह मुख्य कमी है। हमें मार्क्स और लेनिन के अनुसार पूंजीवाद के इतिहास को विस्तृत करना

चाहिए। पाठ्यपुस्तक में मशीन उत्पादन की अवधि पर एक विशेष अध्याय की जरूरत है, और विनिर्माण पर छोटा करने की जरूरत है।

पाठ्यपुस्तक की दूसरी गंभीर कमी यह है कि मजदूरी का कोई विश्लेषण नहीं है। मुख्य समस्या स्पष्ट नहीं किया गया है। जैसा मार्क्स ने किया है मजदूरी पर विचार पूर्व एकाधिकार पूंजीवाद वाले अनुभाग में किया गया है। एकाधिकार पूंजीवाद की परिस्थितियों में मजदूरी के बारे में कुछ भी नहीं है। मार्क्स के बाद बहुत सारे समय बीत गए है.

मजदूरी क्या हैं? मजदूरी आजीविका के लिए न्यूनतम के अलावा कुछ बचत है। यह दिखाना आवश्यक है कि न्यूनतम आजीविका, नाममात्र और वास्तविक मजदूरी क्या है, और साफ़ साफ़ और दृढ़ता पुर्वक दीखाया जाना चाहिए। हम मजदूरी के आधार पर पूंजीवाद से लड़ रहे हैं। समकालीन जीवन के ज्वलंत तथ्यों को ले लो। फ्रांस में, जहाँ मुद्रा का अवमूल्यन हो रहा है, आप लाखों प्राप्त करते है, लेकिन आप कुछ भी नहीं खरीद सकते। अंग्रेज चिल्लाते है कि उनके यहाँ मजदूरी का उच्चतम स्तर है और वस्तुए सस्ती है। और वे हर समय इस तथ्य को छिपाते है कि यद्यपि सांकेतिक मजदूरी ऊँचा है, तो भी, बचत की तो बात हो छोड़िये, वे न्यूनतम आजीविका प्रदान करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इंग्लैंड में कुछ उत्पाद, रोटी और मांस, की कीमतें कम हैं, लेकिन मजदूरों को कम मात्रा में राशन पर मिलता है। अन्य उत्पाद बढ़ी हुई कीमतों पर बाजार से खरीदे जाते हैं। वहाँ कीमतों की बहुलता है। और अमेरिकियों को अपने उच्च जीवन स्तर के बारे में बहुत घमंड हैं, लेकिन अपने स्वयं के आंकड़ों के अनुसार उनके मजदूरों को दो-तिहाई न्यूनतम आजीविका प्रदान नहीं कर पा रहे हैं। पूंजीपतियों की इन सभी चालों को उजागर किया जाना है। जो लम्बे समय तक सुपर मुनाफे और कालोनियों पर जीवित रहे है, ठोस तथ्यों के आधार पर हमें इन अंग्रेज श्रमिकों को दिखाना है कि पूंजीवाद के तहत वास्तविक मजदूरी में गिरावट स्वयंसिद्ध है।

हम उन्हें बता सकते है कि हमारे यहाँ गृह युद्ध के दौरान सब लोग करोड़पति थे। इस युद्ध के दौरान कीमतें अपनी निम्नतम पर थी, एक किलोग्राम रोटी प्रति एक रूबल के लिए बेचा जाता था, लेकिन उत्पादों पर राशन था।

हमारे यहाँ मजदूरी की गणना अलग तरीके से की जाती है। देश में वास्तविक मजदूरी की स्थिति के बारे में ठोस तथ्यों के आधार पर दिखाना आवश्यक है। इसका महान क्रांतिकारी और प्रचार महत्व है।

एकाधिकार पूंजीवाद के अनुभाग में मजदूरी के सवाल के साथ निपटना और समकालीन संदर्भ में इस पर वापस आना सही होगा।

पाठ्यपुस्तक के मॉडल में एक बड़ा अध्याय प्राथमिक संचय को समर्पित है। आप दो पन्नों में कुछ ही शब्दों में इस बारे में कह सकते है। यहां यह उल्लेख किया गया है कि कैसे कोई कतिपय रानी किसानों को उनकी भूमि से दूर ले गयी। इस सब से आज आप किसे प्रभावित करने जा रहे हैं? और अधिक महत्वपूर्ण बातें छोड़ दी गयी है। साम्राज्यवादी युग ऐसे बहुत अधिक ज्वलंत उदाहरण प्रदान करता है।

पाठ्यपुस्तक की संरचना की योजना के बारे में। पूंजीवाद पर खंड को दो भागों में विभाजित किया जाना चाहिए: 'क' के तहत - पूर्व एकाधिकार पूंजीवाद और 'ख' के तहत - एकाधिकार पूंजीवाद।

अब राजनीतिक अर्थशास्त्र के उद्देश्य के बारे में। पाठ्यपुस्तक में राजनीतिक अर्थशास्त्र के उद्देश्य नहीं बल्कि उसका एक परिचय की स्थापना आप पाते है। राजनीतिक अर्थशास्त्र के उद्देश्य और इसके परिचय निर्धारण करने के बीच एक अंतर है। इस संदर्भ में पाठ्यपुस्तक का दूसरा प्रकार विषय के करीब है, हालांकि, यहाँ भी, आप एक परिचय के साथ खत्म करते है। मार्क्स द्वारा इस्तेमाल किया गया कुछ आर्थिक शब्द यहाँ समझाया जाता है। यह मार्क्स और लेनिन की आर्थिक कृतियों को समझने की ओर बढ़ने में पाठक की मदद करता है।

ऐसा लिखा है कि राजनीतिक अर्थशास्त्र उत्पादन के संबंधों का विश्लेषण करता है। लेकिन यह हर किसी के लिए सुबोध नहीं है। आप कहते हैं कि राजनीतिक अर्थशास्त्र उत्पादन और विनिमय के संबंधों की जांच करता है। यह गलत है। विनिमय को ले। आदिम समाज में कोई विनिमय नहीं होता था। यह गुलाम समाज में भी विकसित नहीं किया गया था। परिसंचरण शब्द से भी काम नहीं चलेगा। यह सब समाजवाद के लिए भी बहुत उपयोगी नहीं है। यह कहा जाना चाहिए: राजनीतिक अर्थशास्त्र उत्पादन और भौतिक वस्तुओं के वितरण की जाँच करता है। यह सभी समय के लिए लागू होता है। उत्पादन प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंध को व्यक्त करता है, और वितरण से पता चलता है कि उत्पादित वस्तुएं किधर जाती है। यह विशुद्ध रूप से आर्थिक पहलू है।

पाठ्यपुस्तक में राजनीतिक अर्थशास्त्र के उद्देश्य से आदिम समाज में कोई संक्रमण नहीं है। मार्क्स *पूंजी* माल के साथ शुरू करते है और ऐसा क्यों है कि आप आदिम समाज के साथ शुरू करते है? यह समझाया जाना चाहिए।

प्रतिपादन के दो तरीके हैं: एक विश्लेषणात्मक और अमूर्त विधि है। यह विधि ऐतिहासिक सामग्री के उपयोग के साथ-साथ सामान्य और अमूर्त अवधारणाओं की व्याख्या के साथ शुरू होता है। प्रतिपादन की ऐसी विधि है(यह *पूँजी* में मार्क्स द्वारा इस्तेमाल किया गया था) उनलोगों के लिए है जो लोग अधिक परिपक्व है। अन्य विधि ऐतिहासिक है। यह विधि विभिन्न आर्थिक प्रणाली के ऐतिहासिक विकास का उद्घाटन करता है और ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर सामान्य अवधारणाओं की व्याख्या करता है। यदि आप चाहते हैं कि लोग अधिशेष मूल्य के सिद्धांत को समझे- अधिशेष मूल्य की समस्या उठने के पल से इसकी व्याख्या करे। ऐतिहासिक विधि उन लोगो के लिए हैं, जो कम तैयार हैं। यह और अधिक ग्राह्य है क्योंकि यह आसानी से आर्थिक विकास के नियमों को समझने की ओर पाठक को ले जाता है। (वह विश्लेषणात्मक और ऐतिहासिक विधि की परिभाषा पढ़ते है)।

पाठ्यपुस्तक में एंगेल्स के असभ्यता और बर्बरता के मॉडल का इस्तेमाल किया गया है। यह कहीं भी नहीं ले जाता है। यह बकवास है। एंगेल्स अपनी कृति में मॉर्गन के साथ कोई मतभेद नहीं रखना चाहते थे, जो उस समय भौतिकवाद की ओर बढ़ रहे थे. एंगेल्स का यह मकसद था। लेकिन यह हमारे लिए कैसे चिंता का विषय है? लोग कहेगें कि हम बुरे मार्क्सवादी हैं यदि एक बार हम एंगेल्स के प्रतिपादन का अनुसरण नहीं करते। ऐसा कुछ भी नहीं है। हम यहाँ एक बड़ा ढेर पाते है: पाषाण युग, कांस्य युग, रिश्तेदारी प्रणाली, मातृसत्ता, पितृसत्ता और इन सब के शीर्ष पर असभ्यता और बर्बरता। यह सब पाठक को केवल भ्रमित करता है। असभ्यता और बर्बरता 'सभ्य लोगों' द्वारा इस्तेमाल किये गए तिरस्कारपूर्ण भाव थे।

पाठ्यपुस्तक में ढेर सारे अस्पष्ट, अनावश्यक शब्द और बहुत सारे ऐतिहासिक प्रयोग है। मैंने 100 पृष्ठ पढ़ा है और 10 काट दी है और अधिक काट सकता था। एक पाठ्यपुस्तक में एक भी ज़रूरत से ज़्यादा शब्द नहीं होना चाहिए, प्रतिपादन वास्तविक आधार पर रूप दिया जाना चाहिए। और यहाँ अनुभाग के अंत में आपकी ये हरकते है: आप साम्राज्यवादी बदमाश हैं, आपके यहाँ गुलामी, बंधुआ मजदूर है, आदि। ये सभी हास्यास्पद है। ये समय नष्ट करते है और भ्रम पैदा करते है। हमें लोगो के दिमाग को प्रभावित करने की जरुरत है।

थॉमस मोरे और काम्पनेल्ला के बारे में आप कहते है कि वे कट गए थे और जनता के साथ उनका सम्बन्ध नहीं था। यह सिर्फ हंसी पैदा करता है। क्या यह प्रासंगिक है? तो क्या? यहां तक कि अगर वे आम जनता के समीप होते, वह समीपता हमें क्या देता? उत्पादक शक्तियों के विकास का यह स्तर असमानता की मांग करता है जो संपत्ति संबंधो के चलते पैदा हुआ था। असमानता को दूर करना यहाँ बिल्कुल असंभव था। कल्पनावादी सामाजिक विकास के नियम नहीं जानते थे। यहाँ हम एक आदर्शवादी व्याख्या पाते है।

यह आवश्यक है कि हमारे कार्यकर्ता मार्क्सवादी आर्थिक सिद्धांत से पूरी तरह वाकिफ हो।

पहला, बोल्शेविको की पुरानी पीढ़ी सैद्धांतिक रूप से बहुत ही ठोस थी। हमने दिल से *पूँजी* सीखा, सारांश बनाया, विचार-विमर्श किया और एक दूसरे की समझ का परीक्षण किया। यह हमारी ताकत थी और इसने हमें बहुत मदद की।

दूसरी पीढ़ी कम तैयार थी। वे व्यावहारिक मामलों और निर्माण के साथ व्यस्त थे। उन्होंने पुस्तिकाओं से मार्क्सवाद का अध्ययन किया।

तीसरी पीढ़ी व्यंग्य और अखबारों में लेख पढ़ कर बड़े हो रहे है। उनके पास गहरी समझ नहीं है। उन्हें ऐसे पंथ प्रदान की जानी चाहिए जो आसानी से पच जाए। बहुमत मार्क्स और लेनिन का अध्ययन करके नहीं बल्कि उद्धरण पढ़ कर बड़े हुए है।

अगर चीजे इसी तरह चलती रही तो लोग जल्द ही पतित हो जायेगें। अमेरिका में लोग तर्क करते है: हमें डॉलर की जरूरत है, हमें सिद्धांत की क्या ज़रूरत है? हमें विज्ञान की ज़रूरत क्यों है? हमारे साथ के लोग इसी तरह सोच सकते है: 'जब हम समाजवाद का निर्माण कर रहे है हमें *पूंजी* की क्यों जरूरत है?' यह हमारे लिए एक खतरा है- यह मौत है, यह पतन है। आंशिक रूप से भी ऐसी स्थिति नहीं आने देने के लिए हमें अपनी आर्थिक समझदारी में सुधार करना होगा।

पृष्ठों की वर्तमान संख्या की जरूरत नहीं हैं - इसे 766 पृष्ठों तक खीच कर ले जाया गया है। यह जरुरी है कि 500 से अधिक पृष्ठ न हो, और इनमें से आधा पूर्व समाजवादी प्रणाली के लिए और आधा समाजवाद के लिए समर्पित किया जाना चाहिए।

पुस्तक के पहले प्रकार के लेखक ने मार्क्स की शब्दावली समझाने के बारे में कोई चिंता नहीं दिखाई है जो *पूँजी* में प्रयोग किया गया है। मार्क्स और लेनिन द्वारा अक्सर इस्तेमाल की गयी शब्दावली को शुरू से ही पेश किया जाना चाहिए ताकि *पूँजी* और मार्क्स और लेनिन की अन्य कृतियों को समझने के लिए पाठक सक्षम हो सके।

यह बुरा है कि सैद्धांतिक सवालों पर आयोग में कोई तर्क और तकरार नहीं है। याद रखें कि आपका काम ऐतिहासिक महत्व का है। हर कोई पाठ्यपुस्तक पढ़ेगा। सोवियत सत्ता के अस्तित्व में आये अब 33 वर्ष हो गए है और अभी तक हमारे पास राजनीतिक अर्थशास्त्र पर एक किताब नहीं है। हर कोई इसके लिए इंतज़ार कर रहा है।

साहित्यिक संदर्भ में पाठ्यपुस्तक बुरे संपादन से ग्रस्त है। वहाँ बहुत कुछ अस्पष्ट है, और नागरिक और सांस्कृतिक इतिहास पर अभ्यास है। यह सांस्कृतिक इतिहास पर पुस्तक नहीं है। इसमे कम ऐतिहासिक अभ्यास की जरूरत है। वे वहाँ केवल आवश्यक सैद्धांतिक प्रस्ताव के दृष्टांत के रूप में होना चाहिए।

मार्क्स की *पूँजी* और लेनिन की *पूंजीवाद का विकास* को ले और उन्हें अपने काम के लिए एक गाइड के रूप में इस्तेमाल करे।

जब पाठ्यपुस्तक तैयार हो जाएगा हम जनता की राय के अदालत के समक्ष रखे गें।

एक और अवलोकन। पाठ्यपुस्तक में पूंजीवाद केवल औद्योगिक क्षेत्र में जांच की गयी है। यह आवश्यक है कि पूरी अर्थव्यवस्था को ध्यान में रखा जाए। *पूँजी* में मार्क्स भी मुख्य रूप से उद्योग को ध्यान में रखते है। लेकिन उनका उद्देश्य अलग था। उन्हें पूंजीवाद और इसकी बुराइयों को बेनकाब करना था। मार्क्स ने अर्थव्यवस्था के पूर्ण रूप के महत्व को समझा था। यह कुएस्ने के आर्थिक टेबल पर दिए गए उनके महत्त्व से स्पष्ट है। भूमि लगान के अध्याय में हमें सिर्फ कृषि की समस्याओं की व्याखया तक अपने को सीमित नहीं रखना चाहिए।

हमने न केवल पूंजीवाद को बेनकाब किया है बल्कि हमने इसे उखाड़ फेंका है और अब हम सत्ता में हैं। हम जानते है कि राष्टीय अर्थव्यवस्था में कृषि का क्या हिस्सा और महत्त्व है।

हमारे प्रोग्राम में भी, मार्क्स की तरह, कृषि पर कम ध्यान दिया गया है. इसे जरुर सुधारा जाना चाहिए।

हमे आर्थिक नियमों को उनकी सम्पूर्णता में अध्यन करना चाहिए. हमें कृषि संबंधो को पूँजीवाद और समाजवाद में उपेक्षा नहीं करना चाहिए।

कामरेड [एल. ए.] लेओंत्येव, [के. वी.] ओस्त्रोवित्यानोव और [पी. ऍफ़.] युदीन के नोट के अनुसार.

---

30 मई 1950 की चर्चा का रिकॉर्ड

19 बजे आरम्भ और 20 बजे समापन

पूर्व-एकाधिकार पूँजीवाद पर टेक्स्ट किस तरह रखना चाहिए? अध्याय के माध्यम से?

अलग अध्यायों से काम नहीं चलेगा। हमें एक सम्पूर्ण तस्वीर की जरुरत है। इस लिए मैंने सभी अध्यायों को एक साथ रखने को कहा था। आप अलग-अलग अध्यायों में व्याख्या नहीं कर सकते। यह आवश्यक है कि पूर्व-पूँजीवाद का वर्णन सम्पूर्णता में की जाए, तदनुरूप आर्थिक विचारो पर तुरंत समालोचना दी जाए, और पूर्व के राजनैतिक अर्थशास्त्र पर मार्क्स द्वारा की गयी आलोचना दी जाए।

पूर्व एकाधिकार पूंजीवाद के अनुभाग की योजना पर, आप प्राथमिक संचय के भाग कैसे प्रस्तुत करने का इरादा रखते है- एक अलग अध्याय में?

(**उत्तर**: नहीं, यह पूंजीवाद के उद्भव के अध्याय में आएगा।)

योजना में 'व्यापार पूंजी और व्यापारिक लाभ' के सवाल को स्पष्ट करने का प्रस्ताव केवल तेरहवें अध्याय में, औद्योगिक पूँजी की विशेषताओं को देने के बाद, किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह गलत है। व्यापार पूंजी का विश्लेषण पहले दिया जाना चाहिए। मैं उत्पादन की पूंजीवादी प्रणाली के उद्भव से पहले व्यापारिक पूँजी के विषय को रखता। व्यापारिक पूंजी औद्योगिक पूंजी के पहले आता है। व्यापारिक पूंजी ने विनिर्माण के उद्भव को प्रेरित किया।

(**नोट**: हम यहाँ प्रस्ताव करते है कि पूंजीवाद के तहत अधिशेष मूल्य के वितरण के ढांचे में व्यापारिक पूँजी की व्याख्या की जाए, और सामंतवाद के अध्याय में हम उस अवधि के व्यापार पूंजी की भूमिका के बारे में बात करे)।

उस मामले में शीर्षक निष्प्रभावी है, फिर, 'व्यापारिक लाभ' के रूप में अध्याय का शीर्षक देना होगा अन्यथा लोग आपको यह कहते हुए समझेगे कि व्यापार पूंजी केवल मशीन उत्पादन की अवधि के दौरान उभरा हैं, और यह ऐतिहासिक दृष्टि से सही नहीं है।

सामान्य तौर पर आप पाठ्यपुस्तक में ऐतिहासिक विधि से परहेज कर रहे हैं। शुरूआत में आपने कहा है कि विवरण में ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग किया जाएगा, और अभी तक आप इससे बचते रहे है। ऐतिहासिक विधि इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक है, इसके बिना ऐसा करना संभव नहीं है। हमारे साथ का कोई भी नहीं समझ पायेगा कि क्यों व्यापारिक पूँजी को पूंजीवाद के तहत मशीन उत्पादन की अवधि की जाचं के बाद रखा गया है।

सामंतवाद पर अध्याय में इस्तेमाल किया स्वर भी गलत है, यह एक दादा द्वारा बच्चों को समझाने का लोकप्रिय बाजारू स्वर है। यहाँ सभी कोई मंच पर कठपुतलियो की तरह आता है - सामंत आता है, व्यापारी आता है,खरीदार आता है।

आप जिनके लिए लिख रहे है उसके अनुसार चित्रण करना चाहिए। आपको लकीर के फकीर नहीं होनी चाहिए बल्कि उन लोगो का ध्यान में रखना चाहिए जिन्होंने 8-10 कक्षाएं समाप्त कर दिया है। और आप यहाँ अधिनियम जैसे शब्द समझा रहे हैं और आपको लगता है कि विवरण के बिना वे समझ नहीं पायेगें। आपने एक गलत स्वर को अपनाया है। आप ऐसे बात करते हो मानो आप परी कथाओं का वर्णन कर रहे हो।

सामंतवाद पर अध्याय में आप लिखते है कि शहर फिर से ग्रामीण इलाकों से अलग होता है। पहली बार शहर ग्रामीण इलाकों से अलग गुलाम समाज के दौरान किया गया था, और, तब इसे फिर से सामंतवाद के तहत अलग किया गया। यह बकवास है। मानो गुलाम समाज के साथ-साथ शहर भी नष्ट हो गए थे। शहर गुलाम समाज के दौरान उभरे थे। सामंतवाद की अवधि के दौरान शहर बने रहे। यह सच है कि पहली अवधि में वे निर्बलता से विकसित हुए लेकिन बाद में शहर मजबूत हुआ। गांवों से शहरों का अलगाव बना रहा। अमेरिका की खोज और बाजार के विस्तार के साथ, व्यापार शहरों में विकसित किया गया था और भारी धन जमा किया गया था।

सामंतवाद पर अध्याय में अमेरिका की खोज के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है। रूस के बारे में बहुत कम कहा गया है।आपको रूस के बारे में अधिक कहना होगा, सामंतवाद के साथ शुरुआत करनी होगी। सामंतवाद पर अध्याय में आपको रूस में सामंतवाद पर मुक्ति अधिनियम के आने तक प्रकाश डालना चाहिए।

सामंतवाद के दौरान बेहद बड़े शहरों जेनोवा, वेनिस और फ्लोरेंस: का अस्तित्व था। सामंतवाद के दौरान व्यापार का भारी मात्रा में विस्तार हुआ था। फ्लोरेंस प्राचीन रोम को बहुत पीछे छोड़ दिया था।

गुलाम समाज के तहत बड़े शहर और बड़े पैमाने पर उत्पादन अस्तित्व में आये थे। जब तक वहाँ दास श्रम था, और सस्ते श्रम उपलब्ध थे वहाँ बड़े पैमाने पर उत्पादन, और बड़े जागीरे हो सकती थी। जैसे ही दास श्रम उपलब्ध होना कम हुए इसके तत्काल बाद जागीरे विभाजित होना शुरू हो गयी। पहले वाली जिंदादिली पहले से ही लापता है। लेकिन शहर प्रमुख बने रहे, वे जीवित रहे। व्यापार का भी संचालन किया गया था, जहाजों के 150 पतवार थे।

इतिहासकारों में से कुछ की यह धारणा है कि मध्य युग गुलाम समाज की तुलना में, पतन का काल था, कि वहाँ आगे जाने के लिए कोई हलचल नहीं थी। लेकिन यह गलत है।

सामंतवाद पर अध्याय में आपने उल्लेख भी नहीं किया है कि किस तरह का श्रम सामंती समाज का आधार था। लेकिन आप को दिखाना है कि प्राचीन काल की दुनिया में में दास श्रम आधार था, और सामंतवाद के तहत यह किसान श्रम था।

जब गुलाम समाज में बड़े जागीर अलग हो गए, गुलामी की व्यवस्था भी गिर गयी, दास अब नहीं था, लेकिन किसान बने रहे। और यहां तक कि गुलाम प्रणाली के तहत किसान थे, लेकिन वे थोड़े थे और हमेशा गुलाम बनने के खतरे के तहत थे। रोमन साम्राज्य तथाकथित 'जंगली' जनजातियों द्वारा जीत ली गयी थी। सामंतवाद तब पैदा हुआ जब दो समाजों का एक-दूसरे के साथ सामना हुआ: एक तरफ - रोमन साम्राज्य और, दूसरी तरफ - जंगली जनजातियाँ, जिसने रोम के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इस प्रश्न को टाल दिया गया है 'जंगली' जनजातियों का नाम भी नहीं लिया गया है। ये कौन सी जनजातियाँ थी? ये जर्मन, स्लाव, फ़्रांस देश की जनजातियाँ और अन्य लोग थे। रोम के विजय के समय ये जनजातियाँ एक कम्यून समुदाय की थी। यह विशेष रूप से जर्मनी के बीच मजबूत था जहां यह मार्क द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया था। कृषि कम्यून रोम और रोमन साम्राज्य के गुलाम प्रणाली के अवशेष के साथ संगठित होना शुरू कर दिया। रोमन साम्राज्य ने उल्लेखनीय धीरज का प्रदर्शन किया। पहले यह दो भागों, पश्चिमी और पूर्वी साम्राज्य में टूट गया। यहाँ तक कि पश्चिमी साम्राज्य के नष्ट होने के लंबे समय बाद तक पूर्वी रोमन साम्राज्य एक लंबे समय तक मौजूद रहा।

यह स्पष्ट रूप से और ठीक ठीक कहना आवश्यक है कि किसान श्रम सामंती समाज के अस्तित्व का मुख्य आधार था।

हम हमेशा कहते हैं कि पूंजीवाद की उत्पत्ति सामंती व्यवस्था से हुई है। यह सच है और निर्विवाद है और ऐतिहासिक रूप से ये कैसे हुआ इसे साबित किया जाना चाहिए। किसी को ऐसा नहीं लगना चाहिए कि पूंजीवाद सामंती समाज के भीतर पैदा हुआ था। यहाँ हमारे पास अमेरिका की खोज नहीं है। लेकिन, सब के बाद, अमेरिका की खोज बुर्जुआ क्रांतियों से पहले मध्य युग के दौरान हुआ। वे भारत के लिए समुद्री मार्ग तलाश कर रहे थें और एक नए महाद्वीप से जा टकराए। लेकिन यह मूलभूत नहीं है। मुख्य बात यह है कि बड़े परिमाण में व्यापार में वृद्धि और बाजार का बड़ा विस्तार वहाँ हुआ। इस प्रकार स्थिति पैदा हुई जिसमें पहला पूंजीवादी विनिर्माता शिल्पी-संघ प्रणाली को तोड़ पाने में सक्षम बने थें। इस प्रकार मालों के लिए एक भारी मांग बनी थी और विनिर्माण प्रणाली इस मांग को पूरा करने के लिए सामने आया। पूंजीवाद इसी तरह

प्रकट हुआ। यह सब सामंती व्यवस्था पर अध्याय में अनुपस्थित है। पाठ्यपुस्तक लिखना कोई आसान काम नहीं है। गहराइ से इतिहास पर विचार करना पड़ता है। आपने सामंतवाद पर अध्याय लिखने का काम व्यावसायिक रूप से किया है। इस तरह से आप अपने सब निरर्थक व्याख्यान देते रहने के आदी हो गए है। और हर कोई आपको वहाँ सुनता है और कोई भी आपकी आलोचना नहीं करता।

पाठ्यपुस्तक लाखों लोगों के लिए लिखा जाना है, इसे सिर्फ हम ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया पढ़े गी और अध्ययन करेगी। अमेरिकी और चीनी इसे पढे गें और यह सभी देशों में अध्ययन किया जाएगा। आपको एक अधिक योग्य पाठक को ध्यान में रखना चाहिए।

दास समाज - पहला वर्ग समाज है। यह पूंजीवाद से पहले, सबसे आकर्षक समाज है। वर्ग समाज की बुराइयाँ अपनी सीमा में उसमे है। अब, जब पूंजीवाद को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, यह गुलाम मालिकों के तरीकों की ओर लौट रहा है। प्राचीन काल में युद्ध का आयोजन किया जाता था ताकि गुलाम प्राप्त किया जाए. और हमारे समय में अन्य देशों, विशेष रूप से सोवियत संघ को गुलाम बनाने के लिए हिटलर ने युद्ध शुरू कर दिया था। यह भी एक तलाशी अभियान था। हिटलर ने हर जगह से गुलामों को प्राप्त किया। हिटलर जर्मनी में लाखों विदेशी कामगारों को ले गया था, वहाँ इटालियंस और बुल्गार्स और अन्य देशों के निवासी थे। वह गुलामी प्रथा को पुनर्जीवित करना चाहता था। लेकिन वह असफल रहा। इसलिए, जब पूंजीवाद संकट में होता है यह गुलामी के पुराने और सबसे बर्बर तरीकों की ओर लौट जाता है।

बुर्जुआ पाठ्यपुस्तकें पुरातनता में लोकतांत्रिक आंदोलन के बारे में बहुत बात करती हैं और 'पेरिक्लेस के स्वर्ण युग' की प्रशंसा करती है। यह दिखाया जाना चाहिए कि प्राचीन काल की दुनिया में लोकतंत्र गुलाम मालिकों के लिए लोकतंत्र था।

मैं वास्तव में पाठ्यपुस्तक में और अधिक गंभीरता से विवरण देने के लिए आपसे अनुरोध करता हूँ। अगर सामग्री का आपको पता नहीं है तो किताबें और अन्य स्रोतों से इसे अध्ययन करे या सक्षम लोगों से पूछे। पाठ्यपुस्तक सबके द्वारा पढ़ा जाने वाला है। यह हर किसी के लिए एक उदाहरण होगा। सामंती व्यवस्था पर अध्याय को आपको फिर से करना चाहिए। सामंतवाद के स्रोत को दिखाना आवश्यक है। गुलाम के मालिक अभिजात वर्ग का सफाया कर दिया गया था और गुलामी व्यवस्था गिरा दी गयी थी। लेकिन भूमि, हस्तशिल्प बने रहे, बस्ती बनी रही और किसान श्रम बने रहे। शहर बने रहे और वे मध्य युग के अंत तक फलित होते रहे।

बुर्जुआ क्रांतियों के साथ -इंग्लैंड में, फ्रांस में, और रूस में किसान सुधारों के साथ - पूंजीवाद का युग शुरू करना आवश्यक है। इस समय तक पूंजीवाद पहले से ही सामंतवाद के भीतर अपना आधार हासिल कर लिया है।

सामंतवाद पर अध्याय में पूंजीवाद के उद्भव से संबंधित सामग्री का एक हिस्सा ले आना बेहतर है।

सामंतवाद की अवधि में राज्य सत्ता की भूमिका और महत्व दिखाना आवश्यक है। जब रोमन साम्राज्य समाप्त हो गया, सत्ता और अर्थव्यवस्था का विकेन्द्रीकरण शुरू हो गया। सामंतो ने एक दूसरे के खिलाफ युद्ध छेड़ा। छोटे राज्य बनाये गए। राज्य सत्ता काल्पनिक बन गयी। हर जमींदार अपना खुद का सीमा शुल्क का घेरा डाल दिया। केंद्रीकृत शक्ति जरूरी हो गयी। बाद में इसने असली ताकत हासिल कर ली जब राष्टों के राज्य राष्ट्रीय बाजारों के उद्भव के आधार पर संगठित होने लगे। व्यापार के विकास ने राष्ट्रीय बाजारों की मांग की। और यहाँ राष्ट्रीय बाजारों के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया है। सामंतो ने व्यापार को बाधित किया। उन्होंने विभिन्न शुल्कों और करों के माध्यम से खुद की रक्षा की। इसे भले ही केवल थोड़े शब्दों में उल्लेख करना आवश्यक है।

सामंती व्यवस्था हमारे अधिक पास है-यह कल तक था। इस अध्याय में रूस और किसान सुधारों के बारे में बात करनी चाहिए, कि कैसे भूमि के साथ या भूमि के बिना किसानों को मुक्त किया गया था। जमींदार डरे हुए थे कि किसानों का उद्धार नीचे से होगा, इसलिए राज्य ने ऊपर से सुधारों को लागू किया। जब किसान सुधार लागु किया गया हमारे यहाँ भू-दास प्रणाली समाप्त हो गयी थी, और फ्रांस में - यह बुर्जुआ क्रांति के समय में हुआ।

अध्याय में प्रस्थापनाओ पर की जा रही चर्चा सही हैं। लेकिन यह सब फैला हुआ है, यह केंद्रित नहीं है और यह लगातार नहीं किया गया है। और मुख्य बात का उल्लेख नहीं किया है। कौन सा श्रम सामंती समाज का केंद्रीय आधार बना?

इलिच से एक उद्धरण यह स्थापित करने के लिए पेश किया गया है कि भूदास प्रणाली डंडे के जोर पर आधारित की गयी थी। यह उद्धरण संदर्भ के बाहर उधृत किया गया है। लेनिन ने सवाल के आर्थिक पहलू पर काफी ध्यान दिया था। 600-700 वर्षों तक डंडे के जोर पर लोगों को रखना असंभव है। मुख्य बात डंडा नहीं है, बल्कि यह कि भूमि जमींदारों की थी। भूमि आधार था और डंडा पूरक था। बिना सोचे कि किस सिलसिले में एक विशेष सोच व्यक्त की गई थी आप मार्क्स और लेनिन से उद्धरण ले लेते है।

आर्थिक विचारों के बारे में कंजूस न बने। इन विचारों के साथ खुद को परिचित करा कर पाठक युग की और अधिक ठोस व्याख्या पाता है। आपको वणिकवाद और कोलबर्ट का उल्लेख करना होगा। देश के भीतर कोलबर्ट ने टैरिफ नीचे लाया लेकिन देश में विनिर्माण और पूंजीगत विकास को प्रोत्साहित करने के लिए उच्च टैरिफ के साथ राज्य को सरंक्षण दिया। वणिकवाद बुर्जुआ क्रांति से पहले ही अस्तित्व में था।

मैंने प्राचीन रोम और ग्रीस में लोकतांत्रिक आंदोलन के बारे में कुछ टिप्पणियां की है और आप के लिए एक पृष्ठ में लिखा है। गुलामी पर अध्याय में आप प्राचीन रोम और ग्रीस में लोकतांत्रिक आंदोलन के बुर्जुआ सिद्धांतों की कोई आलोचना आपने नहीं दिया था। इस आंदोलन की प्रशंसा न केवल बुर्जुआ साहित्य में है, बल्कि हमारे साथ के पुस्तकों में भी कुछ है। फ़्रांसिसी क्रांतिकारी ग्राच्ची के नाम से कसम खाते हैं।

एक बार जब आपने काम हाथ में लिया है तो ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग करके स्पष्ट करना आवश्यक है।

बाजारु प्रचार या लोकप्रिय भाषा की शैली में बह नहीं जाना चाहिए क्योकि तब एक दादा की तरह कहानी कहते हुए नजर आयेगें।

आप कहते है कि शहर ग्रामीण इलाकों से दूसरी बार अलग हो गया था। अलगाव वहाँ था और यह बना रहा था, इसे फिर से अलग करने का कोई कारण नहीं था। गुलाम प्रणाली के तहत पुराने शहर ग्रामीण इलाकों से काट नहीं दिए गए थे। शहर का अलगाव आगे मध्य युग के अंत के दौरान और विकसित किया गया था। वेनिस और फ्लोरेंस जैसे कस्बों को याद करना ही पर्याप्त हैं। हैनसेन याद को याद करे। उनके पास कितने व्यापार थे, कितने जहाजे थे! व्यापारिक पूँजी एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। राजा बड़े व्यापारियों पर निर्भर बने रहे।

वेनिस ने कांस्टेंटिनोपल पर विजय प्राप्त की। इसने सैनिकों को काम पर रखा और यह विजय प्राप्त की। व्यापार की सीमा काफी बढ़ी। सामंतवाद के भीतर एक शक्तिशाली व्यापारी वर्ग उभरा। यह उच्च लाभांश से जेब भर रहा था। प्राचीन काल में सबसे बड़े व्यापारियों में से दो थे - एक हित्ती, जिसका नाम मुझे याद नहीं है, और हीराम के नाम से एक फोएनिकिअन। उनके पास काफी धन था और वे राज्य को भी धन उधार देते थे। लेकिन फुग्गेर्स की तुलना में वे कुछ भी नहीं थे।

(**प्रश्न:** आपके सुझाव में यह स्पष्ट नहीं है कि माल का सवाल आंशिक रूप से, सामंतवाद पर अनुभाग में शामिल किया जाना है या नहीं, जैसा कि यह मॉडल में था?)

बेशक यह सामंतवाद पर अध्याय में माल के बारे में बात करना बेहतर है। लेकिन उसकी संपूर्णता में माल से सम्बन्धित सवाल पूंजीवाद पर अनुभाग में दिए जाने की जरूरत है। ऐतिहासिक विधि अनुसरण करने के लिए हम सहमत हुए थे, क्या हम नहीं हुए थे।

मार्क्स ने एक अन्य विधि का अनुसरण किया। उन्होंने पूंजीवाद के आर्थिक सेल के रूप में माल के साथ शुरू किया, जाचं की और इसे सभी पक्षों की जाच से खत्म किया। लेकिन आप माल के सवाल को भागों में रखे और पूंजीवाद पर अध्याय में खत्म करे। यह महारत हासिल करना आसान बनाता है। माल का सिद्धांत अलग से इन संबंधों के उभरने के रूप में देना जरुरी है।

(**प्रश्न**: चुकि पूर्व एकाधिकार पूंजी की अवधि के आर्थिक विचारों को हम संक्षेप में लिखने जा रहे है, हम लेनिन के कार्यों के विवरण के साथ क्या करे। हम उन्हें कहाँ रखे?)

पूर्व एकाधिकार पूंजीवाद पर अध्याय में साम्राज्यवाद पर उनकी कृति के प्रकाशन तक या, कहे तो, ट्रोट्स्की के खिलाफ उनके लेख *संयुक्त राज्य यूरोप के नारे पर* के प्रकाशन तक लेनिन की कृतियों की व्याख्या करना आवश्यक है. यहाँ तथाकथित मुक्त पूंजीवाद की अवधि की कृतियों को समझाया जाना चाहिए, जब विभिन्न देश तेजी से दूसरों के स्तर तक आ रहे थे और अभी तक खाली पड़े जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। फिर एक नयी अवधि शुरू हुई- एकाधिकार पूंजी की अवधि। इस प्रकार, लेनिन की कृतियों की व्याख्या दो भागों में की जानी चाहिए।

पूर्व-एकाधिकार अवधि में पूंजीवाद की विचारधारा एकाधिकार अवधि से पूरी तरह अलग है। उस समय पूंजीपति वर्ग हर तरह से सामंतवाद को नीचा दीखाता है, स्वतंत्रता की बात करता है, उदारवाद की प्रशंसा करता है। साम्राज्यवाद के तहत यह पूरी तरह से अलग है, जब पूंजीवाद के विचारक उदारवाद के सभी अवशेष दूर फेंक देते हैं और पूर्ववर्ती युगों के सबसे प्रतिक्रियावादी विचारों को अपना लेते है। अब यहाँ एक पूरी तरह से अलग विचारधारा है।

(**प्रश्न:** हमे इसी तरह के सवाल से सामना करना पड़ा है: पूर्व एकाधिकार पूंजीवाद पर एक भाग में हम कई विषयो की व्याख्या करते है, उदाहरण के लिए जमीन से लगान, जिस पर हम कभी भी साम्राज्यवाद पर अनुभाग में वापस नहीं आते है। क्या पूंजीवाद से संबंधित ठोस तथ्यात्मक समकालीन आंकड़ा यहाँ हम दे सकते हैं?)

जाहिर है, आप दे सकते हैं। आखिर साम्राज्यवाद पूंजीवाद भी है।

(**प्रश्न**: मशीन उत्पादन की अवधि के अध्याय में, जैसा कि मार्क्स ने किया था, क्या हम अपने आप को केवल भाप चालित मशीनों तक ही सीमित रखे या हम आगे के विकास- आंतरिक दहन और बिजली के इंजन, जिसके बिना मशीनों की कोई व्यवस्था नहीं होती-को दिखाए?

निश्चित रूप से, हमें मशीनों की व्यवस्था के बारे में भी बात करनी चाहिए।आखिर, मार्क्स ने [18]60 में लिखा था और उसके बाद से प्रौद्योगिकी आगे प्रगति की है।

आपको सामंतवाद पर अध्याय का विस्तार और 15-20 पन्नों से करना होगा।

(**प्रश्न:** क्या हमें दो अध्याय नहीं बनाना चाहिए-1) उत्पादन के सामंती प्रणाली की मुख्य विशेषताएं और 2) उत्पादन के सामंती प्रणाली में गिरावट)?

जैसा आपको आवश्यक लगता है आप खुद इस बारे में फैसला ले। सामंतवाद पर अध्याय में संशोधित लगभग उसी तर्ज पर किया जाना है जो गुलामी पर अध्याय लिखने के लिए इस्तेमाल किया गया था।

सामंतवाद पर अध्याय में 'जंगली' जनजातियों की आर्थिक प्रणाली को इंगित करना आवश्यक है। यह जरुर दीखाया जाना चाहिए कि जब तथाकथित जंगली जनजातियाँ और गुलाम मालिक रोम में मिले तो क्या हुआ।

शुरुआत में वहां भूदास प्रणाली नहीं थी, बाद में इसने जगह ले ली। यह दिखाना आवश्यक है कि कैसे भू-दास सम्बन्ध बने थे। शायद यह आवश्यक है कि सामंतवाद को दो अवधियों में विभाजित किया जाए: पूर्व और बाद की।

विनिर्माण के बारे में बहुत सारी बाते न करे, यह पूंजीवाद का सबसे दिलचस्प अवधि नहीं है। विनिर्माण के तहत प्रौद्योगिकी पुराना होता है, वास्तव में यह हस्तशिल्प के झुण्ड से ज्यादा कुछ नहीं है। मशीनों द्वारा एक नयी गुणवत्ता दी जाती है। विनिर्माण को कम किया जा सकता है, इसमें बहे नहीं। मशीन अवधि में सब कुछ बदल गया।

एक माह की अवधि पूर्व एकाधिकार पूंजीवाद पर अध्याय लिखने के लिए अपर्याप्त है। मुझे लगता है कि पाठ्यपुस्तक के लेखन में यह पूरा वर्ष लगेगा। और इसमें से कुछ अगले साल का एक हिस्सा भी ले सकता है। यह एक बहुत ही गंभीर मामला है।

हमें लगता है कि पाठ्यपुस्तक में हमें आयोग के सभी सदस्यों के नाम मुद्रित करना चाहिए और यह भी ('के.स. सीपीएसयुबी द्वारा अनुमोदित)' मुद्रित करना चाहिए।

[आई.डी.] लप्तेव, [एल.ए.] लेओंत्येव [के.वी.] ओस्त्रोवित्यानोव, [ए.आई.] पश्कोव, [डी.टी.] शेपिलोव [पी.ऍफ़.] युदीन के नोट्स के अनुसार तैयार किया गया.

कोष्ठक में शब्द आयोग के सदस्यों के हैं।

राजनीतिक अर्थशास्त्र के मुद्दों पर चर्चा

(15 फ़रवरी 1952, चर्चा 22.00 पर शुरू किया गया और 23.10 पर बंद हुआ)

प्रश्न: क्या आर्थिक सवालों पर टिप्पणियां प्रेस में प्रकाशित की जा सकती है? वैज्ञानिक अनुसंधान, शैक्षणिक और साहित्यिक कृतियों में क्या आपकी टिप्पणियों का उपयोग हम कर सकते हैं?

उत्तर: हमें टिप्पणी प्रेस में प्रकाशित नहीं करनी चाहिए। राजनीतिक अर्थशास्त्र के सवालों पर विचार विमर्श एकांत में आयोजित की गई थी और लोगों को उनके बारे में पता नहीं है। विचार विमर्श के प्रतिभागियों के भाषणों को प्रकाशित नहीं किया गया था। अगर मैं अपनी टिप्पणी के साथ प्रेस में बाहर आता हूँ इसे समझा नहीं जाएगा।

प्रेस में टिप्पणी के प्रकाशन आपके हित में नहीं है। इसकी यह व्याख्या होगी जैसे कि पाठ्यपुस्तक में सब कुछ स्टालिन द्वारा पहले से परिभाषित किया गया है। मुझे पाठ्यपुस्तक के प्राधिकार के बारे में परवाह है। पाठ्यपुस्तक को एक बेदाग प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। यह उचित होगा यदि टिपण्णी की सामग्री पाठ्यपुस्तक से लोगों की जानकारी में आये।

किसी को प्रेस में टिप्पणी का उल्लेख नहीं करना चाहिए। आप कैसे एक दस्तावेज का उल्लेख कर सकते हैं जिसे प्रकाशित नहीं किया गया है? अगर आप मेरी टिप्पणी पसंद करते हैं तो पाठ्यपुस्तक में उपयोग करें।

आप अपने व्याख्यान, विभाग और राजनीतिक हलकों में बिना लेखक का कोई भी संदर्भ लिए उपयोग कर सकते हैं।

यदि प्रतियों की संख्या अपर्याप्त मुद्रित किया गया है, तो हम कुछ और मुद्रित कर सकते हैं, लेकिन इसे प्रेस में प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए।

प्रश्न: [के.वी. ओस्त्रोवित्वनोव] *आर्थिक सवालों पर आपकी टिप्पणी* में उपभोक्ता वस्तुओं का उल्लेख किया गया है, लेकिन क्या हमारी प्रणाली में उत्पादन के साधन भी माल हैं? यदि नहीं, तो उत्पादन के साधन पैदा करने वाले क्षेत्रो में लागत लेखांकन का उपयोग की व्याख्या हम कैसे करते है?

उत्तर: वे सब कुछ जो स्वतंत्र रूप से बेचे और खरीदे जाते हैं, उदाहरण के लिए रोटी और मांस आदि, माल है। हमारे उत्पादन के साधन सार में माल नहीं कहे जा सकते। ये उपभोक्ता वस्तुयें नहीं है जिन्हें बाजार में भेजा जाता है और जिसे किसी के द्वारा, जो चाहता है, ख़रीदा जाता है। उत्पादन के साधन हम अपने आप को आवंटित करते है। आम तौर पर स्वीकार किए जाने वाले अर्थ में यह एक माल नहीं है, न ही वैसा माल है जो पूंजीवादी स्थितियों के तहत मौजूद रहता है। वहाँ उत्पादन के साधन माल होतें हैं। यहां उत्पादन के साधन को माल नहीं कहा जा सकता।

हमारी लागत लेखांकन वैसा लागत लेखांकन नहीं होता जो पूंजीवादी उद्यमों में संचालित है। पूंजीवाद के तहत लागत लेखांकन इस तरीके से काम करता है है कि लाभहीन उद्यमों को बंद करना पड़ जाता है। हमारी उद्यमें बहुत लाभदायक नहीं भी हो सकती है, वे पूरी तरह निष्फल हो सकती है। लेकिन हमारी प्रणाली में उन्हें बंद नहीं किया जाता। वे राज्य के बजट से सब्सिडी प्राप्त करते हैं। हमारी प्रणाली में लागत लेखांकन गणना के लिए और संतुलन के लिए, लेखांकन के प्रयोजनों के लिए मौजूद है। लागत लेखांकन 'उद्यमों के अधिकारियों की जांच के रूप में प्रयोग किया जाता है। उत्पादन के साधन केवल औपचारिक रूप से हमारी प्रणाली में मालों के रूप में आते है। केवल उपभोग की वस्तुएं ही हमारे यहाँ मालो के प्रवर्ग में आती है, न कि उत्पादन के साधन।

प्रश्न: [के.वी. ओस्त्रोवित्वनोव] क्या उत्पादन के साधनों को एक विशेष प्रकार का माल कहना सही हो सकता है?

उत्तर: नहीं, अगर कोई माल है, इसे सब को बेचा जाना चाहिए जो भी इसे खरीदना चाहता है। इस प्रकार की अभिव्यक्ति 'एक विशेष प्रकार का माल अच्छा नहीं हैं। मूल्य के नियम उपभोक्ता वस्तुओं की खपत के माध्यम से उत्पादन के साधनों के उत्पादन से टकराता है। मूल्य के नियम के संतुलन के लिए और गतिविधियों की व्यवहार्यता की जाँच के लिए, गणना की यहाँ जरूरत होती है।

प्रश्न: [के.वी. ओस्त्रोवित्वनोव] इन शब्दावलियों को कोई कैसे समझे - पूंजीवाद का सामान्य संकट और विश्व पूंजीवादी व्यवस्था का संकट, क्या ये एक ही चीज है?

उत्तर: वे एक और एक ही बात कर रहे हैं। मै जोर देकर कहता हूँ कि हमे पूरे विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के संकट के बारे में बात करनी चाहिए। हम अक्सर केवल एक विशेष देश की चर्चा करते है, जो सही नहीं है। इससे पहले लोग पूंजीवादी व्यवस्था का अध्ययन केवल एक ही देश- इंग्लैंड की स्थितियों के आधार पर करते थे। अब पूंजीवाद के मूल्यांकन के लिए एक विशेष देश नहीं, बल्कि पूरी पूंजीवादी व्यवस्था को लेना चाहिए। सभी पूंजीवादी देशों की अर्थव्यवस्थायें जटिलता से अन्तर्गुन्थित है। कुछ देश अन्य देशों की कीमत पर आगे बढ़ रहे हैं। समकालीन पूंजीवादी बाजार की सीमाओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए। एक उदाहरण, संयुक्त राज्य अमेरिका अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वियों- जर्मनी और जापान- से प्रतिस्पर्धा खत्म होने पर खुद को एक अच्छी स्थिति में पाते हैं। अमेरिका अपने एकाधिकार के बल पर अपना उत्पादन दुगना बढ़ाने की आशा करते है। लेकिन उत्पादन को दोगुना करने के लिए उनकी कोई योजना नहीं आई। गणना विफल हो गयी। एक देश - अमेरिका - आगे बढ़ा और दुसरे पीछे गिर गयें। लेकिन स्थिति अस्थिर है, यह स्थिति भविष्य में बदल जाएगा। कोई एक देश पूंजीवाद की हालत के मूल्यांकन के लिए नमूना नहीं हो सकता है। किसी एक देश को लेना सही नहीं है, हर किसी को पूरा पूंजीवाद लेना चाहिए। मैं जोर देता हूँ: हर एक को पूरी विश्व प्रणाली का अध्ययन करना चाहिए, और हम है कि एक ही देश लेने के आदि है।

प्रश्न: (डी. टी. शेपिलोव) क्या 'उत्पादन के समाजवादी प्रणाली' के भाग की रूपरेखा, जो पाठ्यपुस्तक के मसौदे पर *प्रस्ताव* में दिया गया है, को सही मान सकते है?

उत्तर: मैं प्रस्तावों में दिए गए रूपरेखा के साथ सहमत हूँ।

प्रश्न: [ए अर्केल्यान] हम सोवियत संघ के राष्ट्रीय आय के उन हिस्सों को क्या कहते है जिन्हें 'आवश्यक उत्पाद' और 'अधिशेष उत्पाद' के नाम से जाना जाता था?

उत्तर: 'आवश्यक और अधिशेष श्रम' और 'आवश्यक और अधिशेष उत्पाद' की अवधारणायें हमारी अर्थव्यवस्था के लिए अनुकूल नहीं हैं। क्या वे सभी जो कल्याण और रक्षा में जाते है, आवश्यक श्रम में नहीं आते है? क्या मजदूरों को उस में कोई दिलचस्पी नहीं है? समाजवादी अर्थव्यवस्था में हमें लगभग निम्नलिखित तरीके से भेद करते जाना चाहिए: श्रम स्वयं के लिए और श्रम समाज के लिए। वह जिसे समाजवादी अर्थव्यवस्था के संबंध में पहले आवश्यक श्रम के रूप में

कहा गया था स्वयं के लिए श्रम के साथ मेल खाता है, और जिसे पहले अधिशेष श्रम कहा जाता था वह समाज के लिए श्रम है।

प्रश्न: [ए. अरकेल्याँ] मूल्य के नियम के 'कार्य को सीमित' करने की अवधारणा क्या सोवियत संघ में मूल्य के नियम के 'रूपांतरण' की अवधारणा के स्थान पर लागू करना सही है?

उत्तर: विज्ञान के नियमों को सृजित, नष्ट, निराकृत, बदला या रूपांतरण नहीं जा सकता। नियमों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। अगर हम उनका उल्लंघन करते है, हमें भुगतना पड़ता हैं। एक राय हमारे बीच व्यापक है कि के समय नियमो का अतीत है। देखने का यह नजरिया अक्सर न केवल अर्थशास्त्रियों के बीच बल्कि व्यावहारिक काम में लगे लोगों और नेताओं में भी पाया जाता है। यह नियम की अवधारणा के अनुरूप नहीं है। नियमो के परिवर्तन के बारे में प्रस्थापना विज्ञान से एक विषयांतर है, यह टुटपुँजियेपन से आता है। प्रकृति और समाज के नियमों को बदलना संभव नहीं है। अगर नियमो को बदलना संभव है तो इसे समाप्त करना भी संभव है। अगर नियमो को बदलना और समाप्त करना संभव है तो इसका मतलब है कि 'हमारे लिय सब कुछ संभव है'। नियम को ध्यान में रखा जाना चाहिए समझना चाहिए और उपयोग किया जाना चाहिए। उसके प्रभाव क्षेत्र को सीमित करना संभव है। भौतिक और रसायन शास्त्र में ऐसा ही है। यह सब विज्ञान के सही है। नियम को बदलने का नहीं, बल्कि उसके कार्य क्षेत्र को सीमित करने की बात किसी को करनी चाहिए। यह ज्यादा सटीक और वैज्ञानिक होगा। कोई अस्पष्टता पाठ्यपुस्तक में अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। हम राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर पाठ्यपुस्तक पूरी दुनिया के सामने लेकर आ रहे हैं। देश और विदेश में इसका इस्तेमाल किया जाएगा।

हम नियम को नहीं, बल्कि भौतिक वस्तुगत स्थितियों को सीमित करते है। जब नियम का कार्य क्षेत्र सीमित किया जाता है, नियम कुछ अलग दीखाई देता है. मूल्य के नियम का कार्य क्षेत्र हमारे यहाँ सीमित है. मूल्य का नियम ठीक वैसा नहीं है जैसा यह पूँजीवाद के तहत था। हमारे यहाँ यह रूपांतरित नहीं हुआ है, बल्कि वस्तुगत स्थितियों के ताकत से सीमित हुआ है। मुख्य बात यह है कि यहाँ निजी सम्पति को समाप्त कर दिया गया है और श्रम शक्ति माल नहीं है। ये वस्तुगत स्थितिया है जो मूल्य के नियम के कार्य क्षेत्र को सीमित करने में निर्धारित करते है। मूल्य के नियम को सीमित इसलिए नहीं किया जाता है क्योकि हम ऐसा चाहते है बल्कि वैसा जरुरी है, सीमित करने की वे अनुकूल परिस्थितियाँ है। ये वस्तुगत परिस्थितिया हमें मूल्य के नियम के कार्य क्षेत्र को सीमित करने को प्रेरित करती है।

नियम वस्तुगत प्रक्रिया का एक प्रतिबिंब है। नियम वस्तुगत बलों के बीच के संबंध को दर्शाता है। नियम कारण और परिणाम के बीच संबंध को दर्शाता है। यदि बलों का निश्चित संतुलन और निश्चित वस्तुगत परिस्थितियां दी जाती हैं, तो अनिवार्य रूप से कुछ निश्चित परिणाम निकलते है। इन वस्तुगत परिस्थितियों का ध्यान रखना होता है. यदि कुछ वस्तुगत परिस्थितिया गायब है तो तदनुरूप परिणाम भिन्न होगा। हमारे यहाँ वस्तुगत परिस्थितिया पूँजीवाद की तुलना में(निजी सम्पति नहीं है और श्रम शक्ति माल नहीं है) बदल गयी है, इस लिए परिणाम भी भिन्न हैं। हमारे यहाँ मूल्य का नियम बदला नहीं है, बल्कि वस्तुगत परिस्थितियों के चलते कार्य क्षेत्र सीमित हो गया है।

प्रश्न: सोवियत संघ में लाभ की श्रेणी को कैसे समझना चाहिए?

उत्तर: लाभ की एक निश्चित राशि की हमें जरूरत होती है। लाभ के बिना हम भंडार नहीं बना सकते, संचय नहीं कर सकते, रक्षा कार्यों की पूर्ति के लिए समर्थन नहीं जुटा सकते और सामाजिक जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते। यहाँ हम देख सकते हैं कि श्रम खुद के लिए है और श्रम समाज के लिए है। लाभ शब्द अपने आप में बहुत गंदा हो गया है। कोई अन्य अवधारणा अच्छी हो सकती है? लेकिन क्या? शायद शुद्ध आय? लाभ श्रेणी के तहत हमे पूरी तरह से एक अलग छिपा हुआ अर्थ मिलता है। हमारे यहाँ पूंजी का प्रवाह सहज नहीं है और प्रतिस्पर्धा का कोई नियम नहीं है। हमारे यहाँ न तो पूँजीवाद के अधिकतम लाभ का नियम है न ही औसत लाभ का नियम. लेकिन लाभ के बिना अर्थव्यवस्था का विकास करना संभव नहीं है। हमारे उद्यमों के लिए मुनाफा की कम से कम मात्र भी पर्याप्त हैं और कभी-कभी वे अन्य उद्यमों के मुनाफे के कारण लाभ के बिना काम कर सकते हैं। हम खुद अपने संसाधनों को वितरित करते है। पूंजीवाद के तहत केवल लाभदायक उद्यमें मौजूद रह सकती हैं। हमारी प्रणाली में हमारे पास बहुत ही लाभदायक, कुछ हद तक लाभदायक और पूरी तरह से लाभहीन उद्यमें है। पहले वर्ष के दौरान हमारे भारी उद्योग कोई भी लाभ नहीं दिए थे, लेकिन बाद में लाभ देना शुरू कर दिया। सामान्यतः प्रारंभिक अवधि के दौरान भारी उद्योग के उद्यमों को खुद साधन की जरूरत होती हैं।

प्रश्न: [ए.आई. पश्कोव]क्या आर्थिक चर्चा में सोवियत मुद्रा और सोने के संबंध के मुद्दे पर प्रतिभागियों के बहुमत की स्थिति सही है? अल्पसंख्यक के अनुयायियों में से कुछ, जो इस संबंध(लिंकेज) को खारिज करते है, कहते है कि *नवंबर 1951 की चर्चा के साथ जुड़े आर्थिक सवालों पर टिप्पणी* में इस सवाल का कोई जवाब नहीं है।

उत्तर: क्या आपने *प्रस्तावों* को पढ़ा है? मेरी टिप्पणियों में यह उल्लेख किया गया है कि अन्य मुद्दों पर *प्रस्तावों* के बारे में मेरी कोई टिप्पणी की जरूरत नहीं है। इसका मतलब है कि मैं सोने के साथ हमारे मुद्रा के संबंध के मुद्दे पर *प्रस्ताव* के साथ सहमत हूँ।

प्रश्न: [ए. आई. पश्कोव] जैसा कि विचार विमर्श के कुछ प्रतिभागियों ने जोर देकर कहा था, क्या यह सही है कि सोवियत संघ में अंतर-लगान पूरी तरह से राज्य से निकाला जाना चाहिए?

उत्तर: अंतर लगान के सवाल पर मैं बहुमत की राय के साथ हूँ।

प्रश्न: [ए. डी. गुसकोव] क्या सोवियत मुद्रा और सोने के बीच संबंध का मतलब है कि सोना सोवियत संघ में एक मौद्रिक माल है?

उत्तर: सोना एक मौद्रिक माल है। हमारे यहाँ इससे पहले सोने की निकासी के उत्पादन की लागत के साथ चीजें अच्छी नहीं थी। बाद में हमने उत्पादन की लागत नीचे लाने के लिए कदम उठाए और चीजें बेहतर हुई है। हमने स्वर्णमान की तरफ संक्रमण किया। हमारा लक्ष्य यह है कि सोना एक माल बन जाए और हम इसे हासिल करेंगे। उसमें निश्चित रूप से सोने का मुद्रा से विनिमय करने की आवश्यकता नहीं है। यह पूंजीवादी देशों में भी प्रचलित नहीं है।

प्रश्न: [आई.डी. लाप्टेव] सोवियत राजकीय वित्त आधार के क्षेत्र के हैं या राज्य के राजनीतिक ढांचे के?

उत्तर: यह अधिरचना है या आधार? (हंसते हुए)। सामान्यतः आधार और अधिरचना के मुद्दे पर बहुत कहा गया है। ऐसे लोग हैं जो सोवियत सत्ता को भी आधार से निर्वासित कर रहे हैं।

अगर आप इस मुद्दे पर आधार और ढांचे को एक तरफ छोड़ दे, तो हमें समाजवादी सम्पति से शुरू कर आगे बढ़ना होगा। हमारा बजट पूंजीवादी बजट से मौलिक रूप से भिन्न होता है। पूँजीवाद के तहत प्रत्येक उद्यम का अपना खुद का बजट होता है और राज्य का बजट हमारे राज्य के बजट की तुलना में अधिक संकीर्ण क्षेत्र शामिल करता हैं। हमारा बजट जन अर्थव्यवस्था के सभी आय और व्यय को शामिल करता है। यह जन-अर्थव्यवस्था की पूरी स्थिति को दर्शाता है और न कि बस प्रबंधन पर व्यय को। यह बजट पूरी जन अर्थव्यवस्था का होता है। इसलिए, हमारे वित्त में आधार के तत्व प्रबल होते हैं। लेकिन इसमें अधिरचना के तत्व भी वर्तमान होते हैं, उदाहरण के लिए, प्रबंधन पर व्यय अधिरचना के अंतर्गत आता है। हमारे राज्य जन अर्थव्यवस्था की देखरेख करते हैं, हमारे बजट में न केवल प्रबंध तंत्र पर, बल्कि पूरे

जन अर्थव्यवस्था पर किया गया व्यय शामिल है। बजट में अधिरचना का तत्व है, लेकिन अर्थव्यवस्था के तत्व प्रबल होते हैं।

प्रश्न: [ए वी बोल्गोव] क्या यह सही है कि कृषि अर्टेल (मजदूर संस्था) समाजवाद से साम्यवाद के पूरे निर्बाध संक्रमण की अवधि के दौरान मौजूद होगा जबकि कृषि कम्यून केवल साम्यवाद के दूसरे चरण से संबंधित है?

उत्तर: सवाल बेमानी है। अर्टेल कम्यून की ओर बढ़ रहा है, यह स्पष्ट है। कम्यून तब बनाया जाएगा जब उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के किसान गृहस्थी के कार्य समाप्त हो जाएगें। कृषि कम्यून के साथ जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं है। कम्यून में संक्रमण के लिए व्यापक सवालों, अच्छा कैंटीन का निर्माण, कपड़े धोने, आदि के समाधान की आवश्यकता होती है। जब किसानों को कम्यून के लिए एक संक्रमण की व्यवहार्यता का यकीन हो जाएगा कृषि कम्यून बनाया जाएगा। *अर्टेल* साम्यवाद के दूसरे चरण के अनुरूप नहीं है, और संभवतः कम्यून साम्यवाद से मेल खाता है। अर्टेल को माल संचलन की आवश्यकता होती है और, कम से कम, फिलहाल उत्पादों के आदान प्रदान की अनुमति नहीं देता, या और भी प्रत्यक्ष वितरण के लिए अनुमति नहीं देता। उत्पाद-विनिमय आखिरकार अभी भी विनिमय होता है, और प्रत्यक्ष वितरण जरूरतों के हिसाब से वितरण होता है। जब तक माल उत्पादन, बिक्री और खरीद मौजूद हैं, हमें इसे ध्यान में रखना चाहिए। अर्टेल बिक्री और खरीद के साथ जुड़ा हुआ है, जबकि साम्यवाद के दूसरे चरण में ही प्रत्यक्ष वितरण का विकास होगा। कृषि अर्टेल कब एक कम्यून में विकसित होगा कहना मुश्किल है। यह कहना संभव नहीं है कि जब कम्यून बनाया जाएगा साम्यवाद का दूसरा चरण पहले से ही अस्तित्व में होगा। लेकिन यह कहना भी जोखिम भरा है कि कम्यून के बिना साम्यवाद के दूसरे चरण में संक्रमण संभव नहीं है।

एक साधारण आदमी की तरह साम्यवाद के दूसरे चरण के लिए संक्रमण की कल्पना नहीं करनी चाहिए। वहाँ साम्यवाद में कोई विशेष 'प्रवेश' नहीं होगा। तेजी से, अपने आप को जाने बिना हम साम्यवाद में प्रवेश करेंगे। यह 'शहर में प्रवेश' की तरह नहीं है, 'द्वार खुले हैं - प्रवेश करे"। सामूहिक फार्मों में से कई महिला सदस्य अभी भी गृहस्थी काम के बंधन से मुक्त होना नहीं चाहती, या कोलख़ोज़ को मवेशियाँ सौंपना नहीं चाहती, ताकि इससे मांस और दूध उत्पादों को प्राप्त कर सके। लेकिन अब वे मुर्गी के मामले में ऐसा करने के लिए मना नहीं करती। ये केवल भविष्य का पहला प्रस्फुटित रंग हैं। वर्तमान में कृषि अर्टेल अर्थव्यवस्था के विकास के लिए एक बाधा नहीं है। साम्यवाद के पहले चरण के दौरान अर्टेल धीरे-धीरे एक कम्यून में विकसित होगा। यहां सीधी रेखा नहीं खिंची जा सकती।

कोलख़ोज़ में उत्पादन समाज के पूरे स्तर तक लाना आवश्यक है। यहाँ कई जटिल सवाल हैं। कोल्होज़ में काम करनेवालो को समाज के मामलों में और अधिक विचार करने के लिए सिखाने की जरूरत है। वर्तमान में कोल्होज़ अपने स्वयं की अर्थव्यवस्था के अलावा कुछ और के बारे में जानना नहीं चाहते। वर्तमान में जिला व प्रांतीय स्तर पर कोल्होज़ का कोई एकीकरण नहीं है। उद्योग और सामूहिक फार्मों के प्रतिनिधियों से मिलकर एक अखिल संघ का आर्थिक अंग बनाने के मामले में क्या ऊपर से हमें कदम नहीं उठाना चाहिए जो उद्योग और सामूहिक खेती दोनों की उपज के लिए उत्तरदायी होंगे। कोल्होज़ के साथ साथ राज्य उद्यमों के उत्पादन का भी लेखांकन शुरू करने की जरुरत है और तब सर्वप्रथम अधिशेष उत्पादन के वितरण की बारी आती है। हमें ऐसे कोष की स्थापना करनी होगी जिसका वितरण नहीं किया जाना है, और ऐसे कोष जिसे वितरण के लिए चिन्हित किया जाना है। कोल्होज़ में काम करनेवालों को लगातार यह सिखाने की जरूरत है कि वे पूरे लोगों के हितों को ध्यान में रखे। लेकिन इसमें समय लगेगा और इसमें किसी को जल्दी करने की जरूरत नहीं है। जल्दी करने की कोई जरुरत नहीं है। चीजे ठीक से आगे बढ़ रही हैं. उद्देश्य सही है। पथ स्पष्ट है, और सभी नीतियाँ स्थापित हैं।

प्रश्न: [जेड. वी. एटलस] ऐसा क्यों है कि नवंबर 1951 के चर्चा के साथ जुड़े आर्थिक सवालों पर टिप्पणी में 'मौद्रिक अर्थव्यवस्था' शब्द कोटेशन के निशान में रखा गया है?

उत्तर: जब माल का परिसंचरण है, तो वहाँ मुद्रा होना चाहिए। पूंजीवादी देशो में मौद्रिक व्यवस्था, बैंकों के साथ, मजदूरों की बर्बादी, लोगो की गरीबी और शोसकों के धन में वृद्धि करता है। मुद्रा और बैंक पूँजीवाद के तहत शोषण के साधन के रूप में काम करते है। हमारी मौद्रिक अर्थव्यवस्था उस तरह की नहीं है और पूंजीवादी मौद्रिक अर्थव्यवस्था से अलग है। हमारे यहाँ मुद्रा और मौद्रिक व्यवस्था समाजवादी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में सहयोग करती है। हमारे यहाँ मुद्रा अर्थव्यवस्था एक साधन है जिसे हम समाजवाद के हित में उपयोग कर रहे हैं। कोटेशन के निशान इस लिए दिए गए है ताकि हमारी मौद्रिक अर्थव्यवस्था को पूँजीवाद के तहत अथ्र्व्यस्वस्था से भ्रमित न किया जाए। 'मूल्य' और 'मूल्य के रूप' मेरे द्वारा बिना कोटेशन के निशान के प्रयोग किये जाते है। यहाँ मुद्रा भी समाहित है। हमारे यहाँ मूल्य के नियम को बहुत सारी चीजे प्रभावित करती है, यह अप्रत्यक्ष रूप से उत्पादन और प्रत्यक्ष रूप से परिसंचरण को प्रभावित करता है। परन्तु कार्य करने के इसके क्षेत्र सिमित है। मूल्य के नियम बर्वादी की तरफ नहीं ले जाता है। पूंजीपतियों के लिए बड़ी दिक्कत सामजिक उत्पाद का खपत होता है, मालो का मुद्रा में रूपांतरण होता है। हमारे यहाँ खपत आसानी से होता है, यह बिना रूकावट के आगे बढ़ता है।

प्रश्न : (जी. ऐ. कोज्लोव) राष्टीय अर्थव्यवस्था के नियोजित और समानुपातिक विकास के नियम का क्या अर्थ है ?

उत्तर : राष्टीय अर्थव्यवस्था के नियोजित विकास के नियम और योजना में अंतर है। योजना उन सभी चीजो को नहीं भी ले सकती है, जिसे मूल्य के नियम के अनुसार, इसकी जरूरतों के अनुसार लेना जरुरी होता। यदि, उदहारण के लिए, मोटरो की एक खास संख्या के लिए योजना बनाई जाती है, लेकिन अगर इसके साथ पतली धातु शीट की मात्रा की योजना नहीं बनाई जाती तो वर्ष के मध्य में ऑटोमोबाइल कारखाना में ठहराव आ जाएगा. यदि कोई खास संख्या में ऑटोमोबाइल्स की योजना बनाई जाती है और साथ में पेट्रोल की मात्रा की योजना नहीं बनाई जाती तो इसका मतलब भी दी गयी शाखाओ के सम्बन्ध का उल्लंघन होगा। ऐसे मामलों में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का योजना बद्ध और आनुपातिक विकास का नियम अपने आपको गंभीर तरीके से महसूस कराता है। जब इसका उल्लंघन नहीं होता, यह शांति से काम करता है और इसका पता भी नहीं चलता - यह हर जगह है और यह कहीं भी नहीं है। सामान्य तौर पर जब उनका उलंघन किया जाता हैं सभी नियम महसूस किये जाते हैं, और यह बिना सजा दिए छोड़ता नहीं है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के नियोजित विकास का नियम शाखाओं के बीच सामंजस्य की कमी को दर्शाता है। यह जरुरी बनाता है कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के सभी तत्व परस्पर सामंजस्य में हो और एक दूसरे के साथ सामंजस्य में, उसी कदर विकसित करे। योजना की गलतियों राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के नियोजित विकास के नियम द्वारा सही किये जाते हैं।

प्रश्न: [एम् आई रुबिन्शतें] वर्तमान अवधि में सोवियत संघ के बुनियादी कार्य कैसे समझा जाना है। इस कार्य को निर्धारित करने में क्या हमें 1929 की जनसंख्या के अनुसार प्रति व्यक्ति पूंजीवादी उत्पादन के आंकड़े प्रारंभिक बिंदु के रूप में लेने की जरूरत है या हमें तुलनात्मक प्रयोजनों के लिए पूंजीवादी उत्पादन की अद्यतन(नवीनत्म) स्तर जो, उदाहरण के लिए, अमेरिका के मामले में अर्थव्यवस्था के सैन्यीकरण के कारण 1929 की तुलना में अधिक है, लेने की जरूरत है? जैसा कि अक्सर प्रकाशनों और व्याख्यान में विचार किया जाता है, क्या यह मानना सही है कि उत्पादन की मात्रा की उपलब्धि, 9 वीं फरवरी, 1946 के आपके भाषण में दिए संकेत के अनुसार, साम्यवाद के दूसरे चरण में प्रवेश के लिए सोवियत संघ के निर्णायक आर्थिक कार्य का प्रतीक है।

उत्तर: गणना की विधि जो प्रति व्यक्ति उत्पादन से आगे बढती है अपनी भूमिका बरकरार रखी है। प्रति व्यक्ति उत्पादन देशों की ताकत का बुनियादी पैमाना है। कोई अन्य माप नहीं है जो इसकी जगह ले। 1929 के स्तर से नहीं बल्कि समकालीन उत्पादन के स्तर से आगे बढ़ने की जरूरत है। यह आवश्यक है कि पूंजीवादी देशों की वर्तमान आंकड़ों के संदर्भ में हमारी प्रति व्यक्ति उत्पादन की तुलना करने की जाए।

जो आंकड़े 1946 में मैंने आगे रखे वे दूसरे चरण की ओर संक्रमण के लिए निर्णायक आर्थिक कार्य नहीं दर्शाते थें। इन आंकड़ों को प्राप्त करने से हम और अधिक मजबूत हो जाते हैं। यह दुश्मन के हमले के खतरे से, पूंजीवाद के हमले से हमें हिफाजत करती हैं। लेकिन निर्णायक कार्य जिसका 1946 के भाषण में संकेत दिया गया है अभी तक साम्यवाद के दूसरे चरण के कारक रूप में नहीं दर्शाता है। साम्यवाद के दूसरे चरण में संक्रमण के लिए कुछ साथी बहुत जल्दी में हैं। इस संक्रमण में अत्यधिक जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए क्योकि कोई नियम बना नहीं सकता। फिर भी अन्य लोग साम्यवाद के तीसरे चरण के बारे में सोच रहे हैं। मानदण्ड पुराना है। उन देशों के साथ तुलना के प्रयोजनों के लिए जो अमीर हैं हमें नवीनतम तथ्यों को उपयोग करने की जरूरत है। इसका मतलब आगे बढ़ना होता है।

कामरेड [एल. एम्.] गतोव्स्क्य, [आई. आई.] कुज्मिनोव, [आई. डी.] लप्त्येव, [एल. ए.] लेओंत्येव, [के.वी.] ओस्त्रोवित्यानोव, [वी. आई.] पेर्स्लेगिन, [ए. आई.] पश्कोव, [डी. टी.] शेपिलोव और [पी.ऍफ़.] युदीन के नोट के अनुसार तैयार किया.

कामरेड अल्तास, अरकेल्याँ, बोल्गोव, वसिलिएव, गुसकोव, कोज्लोव, ल्युबिमोव, रुबिन्स्तें के नोट को ध्यान में रखा गया है.

ताहिर असगर द्वारा मूल रूसी से अंग्रेजी में अनुवादित।

* कॉपीराइट © रेवोलुशनरी डेमोक्रेसी, 1998

अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद: एम्. के. आज़ाद (प्रोलेतारियन क्रिटिक)

वेब संकरण http://www.proletariancritique.blogspot.in